सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-5 7 से 21 मार्च, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

महान मार्क्स की याद में

5 मई, 1818–14 मार्च, 1883

''वर्ग-संघर्षों का इतिहास अपने विकास क्रम की एक ऐसी मंजिल में पहुँच चुका है जहाँ पूरे समाज को शोषण-उत्पीड़न, वर्ग-विभेदों तथा वर्ग-संघर्षों से सदा-सर्वदा के लिए मुक्त किए बिना शोषण-उत्पीड़न करने वाले वर्ग पूँजीपति वर्ग के जुए से शोषित-उत्पीड़ित वर्ग, सर्वहारा वर्ग अपने आपको मुक्त नहीं कर सकता।''

– **कार्ल मार्क्स**

महान स्टालिन की याद में

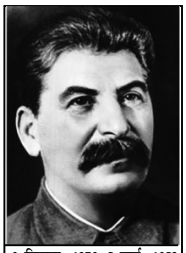

9 दिसम्बर, 1879–5 मार्च, 1953

''पार्टी के कार्यक्रम, रणकौशल और सांगठनिक अभिमतों को खाली मौखिक तौर पर ग्रहण करना ही क्या एक पार्टी सदस्य के मामले में काफी है? इस तरह के एक व्यक्ति को क्या सर्वहारा की फौज का असली नेता कहा जा सकता है? अवश्य ही नहीं। इस तरह की लफ्फाजी करते कई व्यक्ति मिल जाएंगे, जो अनायास ही मुँह से पार्टी के कार्यक्रम के साथ सहमत होकर उसे ग्रहण कर लेंगे, लेकिन काम कुछ नहीं करेंगे। हमारी पार्टी चूँकि एक संग्रामी पार्टी है, इसलिए पार्टी के कार्यक्रम, कौशलगत लाइन और सांगठनिक अभिमतों को कोई खाली मौखिक तौर पर ग्रहण करता है, केवल इसी से पार्टी कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकती। पार्टी के जो सदस्य इसे ग्रहण करेंगे, वे अवश्य ही उसे कार्यक्षेत्र में लागू करेंगे–ऐसी मांग पार्टी करेगी ही। – **जे. वी. स्टालिन**

(सर्वहारा वर्ग और सर्वहारा पार्टी)

केन्द्रीय बजट 2013–14

गरीबों की तबाही बढ़ाने और कार्पोरेट सैक्टर व अमीरों को भारी रियायतें बख्शने का ब्लूप्रिंट

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 1 मार्च, 2013 को जारी बयान में कहा,

'विकाश' को बढ़ावा देने वाले बजट के रूप में जोरशोर से प्रचारित कल घोषित केन्द्रीय बजट 2013 की झलकियों पर सरसरी नजर डालने से उजागर हो जाएगा कि इसकी दिशा पीड़ित गरीबों को मझधार में छोड़ते हुए औद्योगिक घरानों व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए रियायतों और अनुदानों का पिटारा खोल देने की ओर है। खासकर ईंधन, उर्वरक और खाद्य पदार्थों की सब्सिडी में कटौती जैसी वित्तीय बर्बरता की भरमार है। सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि जहां आम लोगों पर कुठाराघात हो रहा है, वहीं साल 2013-14 के लिए 5,42,499 करोड़ रुपये के वित्तीय घाटे के मुकाबले कार्पोरेट सैक्टर और अमीरों को वित्तीय प्रोत्साहन के नाम पर दी जाने वाली छूट-रियायतों की रकम का आंकड़ा कथित तौर पर 5,70,000 करोड़ रुपये है जो दर्शाता है कि कितनी पुख्ता(!) वित्तीय विवेकशीलता बरती जा रही है। मिलिट्री साजोसामान की खरीद को केन्द्र करके इतने सारे घोटालों और दलाली के काण्डों के हुए खुलासे के बावजूद अनुत्पादक रक्षा बजट में 2,03,000 करोड़ रुपये की भारी भरकम परम्परागत बढ़ोतरी कर दी गई है। काले धन की उत्पत्ति को रोकने या कम से कम इसके एक हिस्से को सामने लाने के किसी भी कदम का लेशमात्र भी उल्लेख नहीं किया गया, न ही कर बकायादारों और कर चोरों पर कोई कार्रवाई करने की कोई घोषणा की गई है। उल्टे, सर्विस टैक्स बकायादारों के लिए 'वालंटरी कम्पालाएन्स एनक्रेजमेन्ट स्कीम' की घोषणा की गई है और 'जनरल एंटी एवायडेन्स रूल्स' के पेश करने को तीन साल के लिए टाल दिया गया है। विदेशी पूँजी के और अधिक अंतर्प्रवाह सहित पूँजी बाजार संचालन (केपीटल मार्कीट आपरेशन) में उदारीकरण के कई कदमों को मंजूरी दी गई है जिससे सट्टेबाजी की गतिविधियों को और भी बढ़वा मिलेगा। वित्तमंत्री ने गरीबों के प्रति अपनी जिम्मेदारी की इतिश्री 'डायरेक्ट कैश ट्रांसफर ऑफ सब्सिडी स्कीम' में अपना भरोसा जतला कर दी, इस हकीकत के बावजूद कि इसे लागू करने के लिए कोई आधारभूत ढांचा नहीं है, न ही इसका आपरेशन अंतर्निहित खामियों से मुक्त है जैसाकि कुछ महीने पहले राजस्थान में स्कीम के पायलट प्रोजैक्ट की विफलता से उजागर हुआ था। इसी तरह महिलाओं पर बढ़ते अपराधों से लोगों का ध्यान बटाने और इसके खिलाफ बढ़ते प्रतिवाद को ठण्डा करने के लिए तथाकथित 'निर्भया' फण्ड बनाकर और महिला बैंक खोलने के हास्यास्पद प्रस्ताव के द्वारा एक 'आर्थिक समाधान' का नुस्खा वित्तमंत्री ने पेश किया है।

आवंटन के अधिकतर क्षेत्रों में बढ़ायी गई ग्रांट की डींग हांक कर वित्तमंत्री ने वाहवाही बटोरनी चाही है लेकिन इस पर सरासर चुप्पी साध गये कि इनके अनुरूप रिवेन्यू जुटाने के लिए उनका सुझाव क्या है। यह संदेह पैदा करता है कि थोड़े समय में ही वे बजट प्रस्तावों को रिवाइज कर सकते हैं, 'आऊट ऑफ द बजट' रूट के जरिए लोगों पर और बोझ लाद सकते हैं जो ह्रासोन्मुख मरणासन्न बुर्जुआ संसदीय प्रणाली के कर्ताधर्ताओं का फैशन बन गया है। इसके अलावा, भारी पैमाने की बाजार उधारी, सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों का विनिवेश और करेन्सी नोट छापने का सहारा लिया जाएगा जिससे मुद्रास्फीति का

(शेष पृष्ठ 8 पर)

हैदराबाद में आतंकवादी हमला

आम लोगों की रक्षा करने में सरकार नाकाम

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 22 फरवरी को जारी एक बयान में कहा:

21 फरवरी को हैदराबाद में बम विस्फोट में कम से कम 16 लोगों की बेशकीमती जान चली गई। मौत से जूझ रहे हैं और भी कई लोग। इस तरह की निष्ठुर हिंसा, बेकसूर लोगों की बेरहमी से की गई हत्याएं महज समाज के करोड़ों-करोड़ दुर्दशाग्रस्त लोगों के बीच फूट की दरार को ही बढ़ाती हैं और अन्ततः वोट बैंक की कुत्सित राजनीति को मदद देती हैं। नतीजतन, लगातार बढ़ते शोषण-जुल्म-अन्याय के खिलाफ जनता का एकताबद्ध आन्दोलन गठित करने का आयोजन क्षतिग्रस्त हो जाता है।

अफसोस की बात है कि सभी बुर्जुआ सरकारें हर पल आतंकवाद के खिलाफ तरह-तरह के वागाडम्बर करके भी आम आदमी की जान-माल की रक्षा के मामले में घोर लापरवाही दिखाती हैं। इस बार भी वैसी ही घटना की पुनरावर्त्ती हुई। जबकि देश के नागरिकों की रक्षा के लिए सरकार संवैधानिक तौर पर प्रतिबद्ध है।

राजकीय दमन-उत्पीड़न की वाहिनियाँ अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से लैस हैं, आधुनिक गुप्तचर व्यवस्था का सारे देश में जाल बिछा हुआ है। जिस किसी भी जनआन्दोलन और वर्गसंघर्ष को कुचल डालने के लिए ये हमेशा तैयार रहती हैं। लेकिन इनमें से किसी की भी भूमिका देश के आम नागरिकों पर भयावह हमलों को रोकने में नहीं दिखाई पड़ती। सरकार जोरशोर से आतंकवाद से लड़ने की चाहे कितनी ही बातें करे, देश के लोगों की हिफाजत की बातों की चाहे जितनी भी रट लगाए, लेकिन हकीकत साबित कर रही है कि ये सभी घड़ियाली आँसू बहाने जैसी ही बातें हैं।

आम लोगों से हमारी अपील है कि आतंकवाद के विरोध के नाम पर सरकार के तरह-तरह के छल-कपट के खिलाफ डट कर खड़े हों और आम लोगों की हिफाजत का पुख्ता इन्तजाम करने के लिए प्रशासन को मजबूर करें।

मुक्ति हासिल करने के लिए मार्क्सवाद–लेनिनवाद–शिबदास घोष चिंतन की महान क्रान्तिकारी विचारधारा से लाखों महिलाओं को शिक्षित, प्रेरित व संगठित करें

31 जनवरी 2013 को त्रिवेन्द्रम में एआईएमएसएस के प्रतिनिधि अधिवेशन में कॉमरेड प्रभाष घोष का भाषण

कॉमरेड अध्यक्ष एवं
कॉमरेड प्रतिनिधियों,

सबसे पहले मैं विदेश से आई बिरादराना प्रतिनिधियों और यहाँ उपस्थित प्रतिनिधियों को अपना क्रान्तिकारी अभिनन्दन देता हूँ। कॉमरेडो, कुछ छोटे-छोटे राज्यों को छोड़कर, बाकी लगभग सारे भारत का यहाँ प्रतिनिधित्व हुआ है। आप हमारे देश की लाखों-लाख उत्पीड़ित महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। आप यहाँ बड़े नाजुक हालात में एकत्रित हुई हैं जब हमारे देश में जीवन के सभी क्षेत्र अर्थात् आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व नीति-नैतिक क्षेत्र हर लिहाज से लगातार पूरी तबाही के गर्त में डूबते जा रहे हैं। ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) के आह्वान पर प्रत्युत्तर देते हुए आप सब उचित समाधानात्मक रास्ता अर्थात् महिलाओं के हित-उद्देश्य को, समूचे समाज के हित को बुलन्द रखने के लिए क्रान्तिकारी संघर्ष का रास्ता तय करने के ख्याल से इस सम्मेलन में शामिल हुई हैं।

महिलाओं पर अपराध का बढ़ता ग्राफ

आप जानती हैं कि शासक शेखी बघारने के तौर पर दावा करते हैं कि देश बड़ी तेजी से प्रगति कर रहा है। महज कुछ दिन पहले, उन्होंने बदस्तूर बड़ी शानो-शोकत के साथ 64वाँ गणतंत्र दिवस मनाया। हर साल वे औपचारिक तौर पर 26 जनवरी

(शेष पृष्ठ 2 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 1 का शेष)

को गणतंत्र दिवस, 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं और दावा करते हैं कि भारत तेजी से विकास कर रहा है। वे देश की प्रगति की एक रंगीन तस्वीर पेश करते हैं। दूसरी तरफ हम लाखों-लाख असहाय माताओं को गोद में अपने बच्चों को लिए हुए गलियों में रोटी के लिए हाहाकार मचाते हुए पाते हैं। लाखों बच्चे भुखमरी से और इलाज की कमी से मर रहे हैं। संध्या होते ही हम एक नई तरह का अंधकार पाते हैं। हजारों-हजार माँ-बहनें अपने परिवार का किसी तरह गुजारा चलाने के लिए अपनी देह बेचने के लिए रास्तों पर उतर पड़ती हैं। महिलाओं की खरीद-फरोख्त के अवैध धंधे ने खतरनाक आयाम ले लिया है। 6-7 साल की बच्चियों तक को देह-व्यापार में धकेल दिया जाता है। बहुत बड़ी संख्या में फर्जी शादियाँ होती हैं जिनमें तथाकथित पति कुछ एक दिन पत्नियों को अपनी हवस मिटाने के लिए रखते हैं और फिर वेश्यावृत्ति के बाजार में उन्हें बेच देते हैं। हमारे देश में यह एक लाभप्रद बिजनैस हो गया है। सुहागरातें फूलों की जगह, कांटों की सेज होती जा रही हैं। पति को शराबी और लम्पट पाकर, सदमे में पत्नी या तो पागल हो जाती है या खुदकुशी कर लेती है। दहेज हत्याएं, झूठी शान के लिए हत्या या ऑनर किलिंग, कन्या भ्रूण हत्या और शिशु हत्या के मामले में जबरदस्त बढ़ोतरी हो रही है। छेड़-छाड़, अपहरण, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार निरन्तर बढ़ोतरी पर हैं। फिर भी शासक दावा करते हैं कि देश तेजी से आगे बढ़ रहा है। तब इस प्रगति की दिशा क्या है? यह कहा जाता है कि किसी एक समाज को नारियों के प्रति इसके रवैये की कसौटी पर सभ्य कहा जा सकता है। अगर बात ऐसी है तो क्या हमारे समाज को किसी भी तरह सभ्य कहा जा सकता है? अगर यह सभ्यता है, तो फिर बर्बरता क्या है? बर्बर अवस्था में भी, हम बलात्कार और सामूहिक बलात्कार, दो साल की बच्ची से से लेकर 70 साल की बूढ़ी माँ तक से बलात्कार जैसी वहशियाना करतूतें नहीं पाते हैं। देश की स्थिति बहुत ही भयावह है।

धर्म का महिलाओं के प्रति रुख-रवैया

जहाँ महिलाओं पर ऐसे अपराधों व हिंसा में इजाफा होता जा रहा है, चारों ओर उत्पीड़ित महिलाओं का हाहाकार मचा हुआ है और सिसकियाँ सुनाई दे रही हैं, वहीं मन्दिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों में एक बहुत ही शांत वातावरण में प्रार्थना, पूजा-पाठ, नमाज और भक्ति गीत जारी हैं। पुरोहित और पुजारी सर्वशक्तिमान भगवान की प्रार्थना बदस्तूर कर रहे हैं। लेकिन उत्पीड़ित महिलाओं के आंसू और हाहाकार इन 'पवित्र' देवालयों तक नहीं पहुँच पाते हैं, इन 'पावन' संस्थाओं की चार दिवारी को भेद नहीं पाते हैं। प्रताड़ित, उत्पीड़ित महिलाएँ चीख-पुकार रही हैं, 'यमराज' से विनती कर रही हैं कि मौत देकर उन्हें मुक्ति दे। लेकिन ये पुरोहित-पुजारी इसके बजाय उन्हें धर्मोपदेश दे रहे हैं, उन्हें शिकायत नहीं करने या असन्तोष नहीं प्रकट करने की सलाह दे रहे हैं, बल्कि बस केवल अपनी सब दु:ख-तकलीफों के लिए अपनी बदनसीबी को कसूरवार ठहराने, अपनी विकट स्थिति को भगवान की देन मान लेने और उनके पास जो कुछ है उसे भगवान की मेहरबानी समझने की सलाह दे रहे हैं। उन्हें बताया जाता है कि चूँकि उन्होंने पूर्व जन्म में पाप किए थे इसलिए इस जन्म में उन्हें उसकी सजा मिली। इसलिए उन्हें इस दु:ख-तकलीफ को शांत भाव से, खुशी-खुशी, बिना शर्त मान लेना चाहिए तभी उन्हें मोक्ष प्राप्त होगा। क्या आपको मालूम है कि महिलाओं के प्रति धर्म का रुख-रवैया क्या रहा है? हिन्दू धर्म प्रचारक 'शंकराचार्य' जिन्हें 'भगवान शंकराचार्य' कहा गया, उन्हें यह कहने में कोई गुरेज नहीं था कि 'नारी नर्क का द्वार है।' ईसाइयत में भी आदम और हव्वा की कहानी है जिसमें यह कहा गया है कि सब बुराइयों की जड़ नारी है। बाकी सब धर्मों ने भी इसी तरह के ख्यालात जाहिर किए हैं। महिलाओं के प्रति यह है धर्म का रुख-रवैया। दूसरी तरफ, हम संसदीय संस्थाओं और 'पवित्र संविधान' को पाते हैं।

बुर्जुआ जनतंत्र के पैरोकार दावा करते हैं कि संसदीय व्यवस्था पुरुष और महिला के लिए समान अधिकार की गारण्टी करती है। वे कहते हैं कि सबको न्याय, महिलाओं को न्याय प्रदान करने के लिए न्यायपालिका है। उनका मानना है कि देश की महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिए पुलिस-मिलिट्री है। लेकिन हम क्या देख रहे हैं? हमें देखने को मिलता है कि ये सब झूठी बातें हैं, मजाक और ढकोसले के सिवा और कुछ नहीं हैं। ये बुर्जुआ नेता हर लिहाज से फ्रॉड, पाखण्डी, भ्रष्ट हैं। वे लोगों को ठगने के लिए हमेशा झूठ बोलते हैं। हकीकत क्या है? हकीकत है दानवीय गुलामी, एकाधिकारी पूँजीपतियों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और कॉरपोरेटों का निर्लज्ज शासन जिसकी दासता व गुलामी में महिलाएं प्रताड़ित हो रही हैं। यहाँ तक कि जब बुर्जुआ वर्ग ने अपने उदय काल के शुरूआती दिनों में एक प्रगतिशील भूमिका निभाई थी, उस समय भी महिलाओं के प्रति उनका रुख-रवैया भेदभावपूर्ण था। कहा जाता था कि बुर्जुआ जनतंत्र जनता द्वारा जनता के लिए और जनता का ही है। लेकिन उनके जनता के श्रेणीकरण में महिलाएं शामिल नहीं थी। महिलाओं को मताधिकार से वंचित रखा गया था। यहाँ तक कि उन्हें शिक्षा से भी वंचित रखा गया था। शिक्षा पाने का अधिकार, वोट देने का अधिकार, चुनाव लड़ने और चुने जाने का अधिकार हासिल करने के लिए पाश्चात्य देशों में महिलाओं को कुछ दशकों तक लड़ाई लड़नी पड़ी थी। क्योंकि सामन्तवाद के बाद, पूँजीवाद ने भी एक तरह के शोषण की जगह दूसरे तरह का शोषण कायम किया था। इसलिए आप समझ सकती हैं कि बुर्जुआ नवजागरण के अगुआ रहनुमा पितृसत्तात्मक रुख-रवैये की संकीर्ण घेराबन्दियों से खुद को मुक्त नहीं कर सके थे।

केवल मार्क्सवाद ने ही महिलाओं की दासता के कारण का खुलासा किया

यह बात सही है कि बुर्जुआ विद्वानों और इतिहासकारों ने ही यह खोज की थी कि पूर्ववर्ती काल में पहला मानव समाज मातृसत्तात्मक था। लेकिन वे वैज्ञानिक तौर पर यह विश्लेषण नहीं कर पाए थे कि इसकी जगह पितृसत्तात्मक समाज क्यों और कैसे आ गया। जब तक महान मार्क्स-एंगेल्स का आविर्भाव नहीं हुआ तब तक इसका खुलासा नहीं हुआ। बुर्जुआ इतिहासकार, जिन्होंने मानव समाज के विकास का अध्ययन किया था, उन्होंने अकाट्य प्रमाण जुटाए थे कि पहला समाज मातृसत्तात्मक था। लेकिन मार्क्स-एंगेल्स ने विज्ञान के सभी विशेष नियमों को समन्वित, अन्तरसम्बन्धित और सामान्यीकृत करके पहले-पहल एक वैज्ञानिक दर्शन विकसित किया और इस प्रकार यह खोजा कि प्रकृति की तरह, समाज भी नियम द्वारा परिचालित है। द्वन्द्वात्मक वस्तुवाद का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने दिखाया था कि एक समाज का आधार होता है उसकी उत्पादन व्यवस्था जिसमें उत्पादन सम्बन्ध और उत्पादिका शक्तियाँ शामिल होती हैं। इसके आधार पर ही ऊपरी ढाँचा विद्यमान होता है। ऊपरी ढाँचा दर्शन, विचारधारा, राजनीति, संस्कृति, नीति-नैतिकता, पारिवारिक जीवन, राजनैतिक व सामाजिक संस्थाओं आदि से बना होता है। किसी खास समय में एक खास ऊपरी ढाँचा एक खास आधार पर विकसित होता है और वह ऊपरी ढाँचा एक खास आधार के हित का परिपूरक होता है। एक वर्ग-विभाजित समाज में, हावी शासक वर्ग ऊपरी ढाँचे को कण्ट्रोल करता है। धर्म प्रचारकों का मानना था कि नर-नारी के बीच विभाजन, नारी पर नर का आधिपत्य भगवान द्वारा सर्जित किया हुआ है और इसलिए ये अपरिवर्तनीय और शाश्वत है। बुर्जुआ सिद्धान्तकारों ने भी घुमा-फिराकर कहा कि शारीरिक श्रम और मानसिक श्रम के बीच विभाजन की तरह ही, नर-नारी के बीच विभाजन है। यह विभाजन शाश्वत है। जबकि इसके उलट, मार्क्सवाद ने दिखाया कि प्रकृति में या मानव समाज में कुछ भी शाश्वत नहीं है। हर चीज बदलती है। कोई एक खास परिघटना एक विशिष्ट समय में उभर कर आती है और फिर एक नई परिघटना के लिए जगह छोड़ते हुए अस्तित्व से चली जाती है। यह नियम द्वारा नियंत्रित है। समाज में नर-नारी के बीच विभाजन और नारी पर नर का आधिपत्य कैसे उभर कर आया—इस सवाल पर एंगेल्स ने जो कहा था वह मैं यहाँ पढ़ कर सुनाता हूँ: ''1846 में मार्क्स की और मेरी कृति की एक पुरानी अप्रकाशित पाण्डुलीपि में निम्नलिखित बातें मुझे मिलती हैं: 'पहला श्रम विभाजन वह है जो बच्चे पैदा करने में पुरुष और महिला के बीच विभाजन है' और आज मैं यह बात और इसमें जोड़ सकता हूँ: पहला वर्ग-विरोध जो इतिहास में उभर कर आता है वह एक पति और एक पत्नी वाले एकनिष्ठ-विवाह में पुरुष और महिला के बीच विरोध के विकास के साथ-साथ घटित होता है; और पहला वर्ग उत्पीड़न स्त्री समुदाय के साथ पुरुष समुदाय के उत्पीड़न के साथ-साथ घटित होता है। एकनिष्ठ-विवाह एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक प्रगति थी, लेकिन साथ ही इसने गुलामी और निजी धन-दौलत के साथ-साथ उस युग की भी शुरूआत की जो आज तक चलता आ रहा है।''[1] यहाँ एंगेल्स ने दिखाया था कि कैसे गुलाम व्यवस्था के आविर्भाव के साथ; पुरुष प्रधानता ने समाज में नारी

प्रधानता को हटाकर उसकी जगह ले ली थी। उन्होंने आगे यह दिखाया कि जब तक वर्ग-संघर्ष, अमीर और गरीब, शोषक और शोषित का विभाजन रहेगा तब तक यह पुरुष-प्रधान समाज रहेगा। महान कॉमरेड लेनिन ने भी पूँजीवाद में महिला की अधीनता के सवाल पर चर्चा की थी और यह टिप्पणी की थी: सभी सभ्य देशों में, यहाँ तक कि सबसे उन्नत देशों में भी महिला की स्थिति ऐसी है कि घरेलू दास कहना ही ठीक है। किसी एक पूँजीवादी देश में भी, यहाँ तक कि सबसे स्वतंत्र गणतंत्र में भी क्या महिलाओं को पूर्ण समानता प्राप्त है? हम कहते हैं कि मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों को लानी होगी और इसी तरह महिला मजदूरों की मुक्ति भी खुद महिला मजदूरों को ही लानी होगी।''[2] कॉमरेड स्टालिन ने भी कहा था: ''मानव जाति के इतिहास में शोषित-पीड़ितों का एक भी महान आन्दोलन कामकाजी महिलाओं की भागीदारी के बिना चल नहीं पा रहा है।''[3] कॉमरेडो, मानव इतिहास में, यह केवल मार्क्सवाद-लेनिनवाद ही है जिसने मानवजाति के सामने यह बात रखी कि कैसे मातृप्रधान समाज को हटाकर पुरुष प्रधान समाज ने उत्पादन के साधनों के मालिकाने के आधार पर उसकी जगह ले ली। जब उत्पादन के साधन सम्पत्ति के साधनों के मालिकाने में तब्दील हो गए और इसके पीछे-पीछे दास और दास-प्रभु व्यवस्था गुलामी की शुरूआत की निशानी के तौर पर आई, तब पुरुष प्रधान समाज अस्तित्व में आया। मार्क्सवाद ने सिखाया है कि यह पुरुष प्रधानता का बोलबाला तभी खत्म होगा जब पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने के साथ-साथ वर्ग शोषण का उन्मूलन सदा के लिए कर दिया जाएगा।

भारतीय सन्दर्भ

इस पृष्ठभूमि में आइए हम हमारे देश की स्थिति पर नजर डालें। आप सबको यह मालूम है कि राजा राममोहन राय से भारतीय नवजागरण शुरू हुआ। लेकिन वे खुद को अतिप्राकृतिक और अध्यात्मवादी दृष्टिकोण से पूरी तरह मुक्त नहीं कर पाए। वे वेदांत, सर्वशक्तिमान ब्रह्मा में विश्वास करते थे। लेकिन उन्होंने कुछ एक प्रगतिशील सुधार लागू करवाए। वे सतीदाह की कुख्यात प्रथा के खात्मे लिए लड़े जिसमें महिलाओं को उनके मृत पतियों की जलती चिताओं पर जिन्दा जला दिया जाता था। इसके बाद, हम हमारे देश के पहले धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी विद्यासागर को पाते हैं। वे पहले आदमी थे जिन्होंने वेद, वेदांत, गीता और ऐसे ही अन्य धर्मग्रंथों की निन्दा की। उन्होंने जोर देकर कहा कि ये सब झूठे हैं। इन सबको तजकर उन्होंने वैज्ञानिक शिक्षा चालू करने की माँग की, भौतिकवादी चिन्तन पर जोर दिया। वे अज्ञेयवादी, भौतिकवादी थे। वे विधवा पुनर्विवाह के लिए लड़े, बाल-विवाह और बहु-पत्नी प्रथा के खात्मे के लिए लड़े, वे वैज्ञानिक शिक्षा और स्त्री शिक्षा चालू करने के लिए लड़े। पुरुष प्रधान सामन्ती समाज की ओर से खड़ी की गई जबरदस्त बाधाओं का सामना करते हुए उन्होंने बड़े दु:ख के साथ कहा, ''आप सोचिए, उनके पतियों की मृत्यु हो जाने के साथ ही, महिलाएं बेजान बुत सी बन जाती हैं; फिर वे दु:ख के दंश, दर्द की टीस बिल्कुल महसूस ही नहीं करती हैं; शक्तिशाली यौन-इच्छाएं एकदम जड़ से खत्म हो जाती हैं... कितने गहरे दु:ख की बात है एक देश जिसके पुरुषों में कोई दया नहीं है, कोई सद्गुण नहीं है, न्याय-अन्याय का कोई बोध नहीं है, अच्छे-बुरे के बीच कोई फर्क नहीं है, कोई न्यायपरायणता नहीं है, जिनका प्रमुख काम और एकमात्र सद्गुण है धार्मिक निषेधाज्ञाओं और रीति-रिवाजों के अनुसार चलना। काश! ऐसे देश में ये बदनसीब लड़कियाँ पैदा ही न हों।''[4] उन्होंने एक और उल्लेखनीय बात कही थी। कृपया उस पर भी उचित ध्यान दें। हालांकि मार्क्स-एंगेल्स के विचारों से परिचित होने का उनको कोई मौका नहीं था, फिर भी उनके दिमाग में यह विचार कौंधा था कि, ''महिलाएं सापेक्ष तौर पर कमजोर होती हैं और दोषयुक्त सामाजिक विधि-विधानों के कारण पुरुष की एकदम अधीनस्थ होती हैं।''[5]

(शेष पृष्ठ 4 पर)

साहस और दृढ़ निश्चय के साथ संघर्ष जारी रखने का संकल्प लें

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन मे कॉमरेड माणिक मुखर्जी

खुले अधिवेशन की अध्यक्षा और आदरणीय जस्टिस वैंकट चलैया, आदरणीय डॉक्टर करीम और मंच पर उपस्थित अन्य महानुभाव,

भारत के हर कोने से महिला आन्दोलन की जुझारू प्रतिनिधि यहाँ इकट्ठा हुई हैं। सबसे पहले यहाँ उपस्थित आप सभी को मैं अपना हार्दिक क्रान्तिकारी अभिनन्दन देता हूँ। आज बहुत से महानुभावों ने यहाँ अपने विचार रखे हैं और मूल्यवान सुझाव दिए हैं। आपने उन सभी को सुना है। मैं जानता हूँ कि एआईएमएसएस महिलाओं के न्यायसंगत अधिकारों को स्थापित करने, उनकी मान-मर्यादा की रक्षा करने और उनकी अंतिम मुक्ति हासिल करने के लिए लम्बे समय से संघर्षरत है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारत में केवल यही एक संगठन है जो बेरहम सर्व-व्याप्त पूँजीवादी शोषण से महिलाओं की मुक्ति का सही रास्ता दिखला सकता है। कोई भी इसे नकार नहीं सकता कि आज भारत न केवल एक पूँजीवादी देश है बल्कि पहले ही एक साम्राज्यवादी ताकत बन गया है। स्वभावत: शासक भारतीय पूँजीपति वर्ग और केन्द्र तथा विभिन्न राज्यों में इसकी ताबेदार सरकारें पतनशील मरणासन्न पूँजीवाद-साम्राज्यवाद की सड़ी-गली संस्कृति को बढ़ावा देने के काम में जुटी हुई हैं। दुनिया के तमाम पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देशों में बलात्कार, सामूहिक बलात्कार सहित महिलाओं पर अत्याचार और हमले निरन्तर बढ़ रहे हैं। हर जगह उनकी मर्यादा पर चोट की जाती है। महिलाओं की गरिमा का अनादर इस सभ्यता के सामने एक गंभीर सवाल खड़ा करता है। लेकिन सवाल है कि क्यों? मैं आपका ध्यान एक विशेष परिघटना की तरफ आकर्षित करना चाहूँगा। आप जानते हैं कि शराबखोरी, नशे की लत, पोर्नोग्राफी, यौन-विकृति, टी.वी. फिल्मों और अन्य माध्यमों से अश्लीलता और भौण्डेपन का प्रचार-प्रसार खतरनाक तरीके से बढ़ रहा है और यौन अपराधों की बाढ़ आ गई है। लेकिन इन सब पर रोक लगाने की बजाय शासक वर्ग और उसकी सरकारें सांस्कृतिक अध:पतन और मनोविकृति के इस तीव्र प्रसार की मूकदर्शक बनी हुई हैं। चाहे सीधे-सीध उकसावे में लिप्त भी न हों, असल में वे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसे बढ़ावा दे रही हैं ताकि लोगों की विशेषकर नौजवानों की नैतिक रीढ़ को तोड़ दिया जाए जैसे कि उनमें नैतिकता और मूल्यबोधों का कोई अंश बचा ही न रहे। इसके पीछे एक निश्चत उद्देश्य है। पूँजीवादी शोषण-दमन की चक्की में पिसते हुए आम आदमी कंगाल हो रहे हैं और विभिन्न बुराइयों का शिकार बन रहे हैं। नौजवानों को रोजगार नहीं मिल रहा है। छंटनी, बेरोजगारी और आवश्यक वस्तुओं की आकाश छूती महंगाई उनके जीवन को असहनीय बना रही है। सम्पूर्ण हताशा ने उन्हें घेर लिया है। ये बात वे समझते जा रहे हैं कि इस पूँजीवादी व्यवस्था में कोई भी सरकार उन्हें रोजगार की कोई गारण्टी नहीं दे सकती है, उन्हें अच्छा सम्मानित जीवन प्रदान नहीं कर सकती है। ऐसा जीवन जीने के लिए अभिशप्त, जैसे-तैसे गुजारा करने के लिए आमदनी के किसी स्रोत के अभाव में न केवल नौजवान बल्कि अच्छी-खासी संख्या में मेहनतकश जनता-मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग मात्र जिन्दा रहने के लिए अनैतिक साधन अपनाने के लिए मजबूर किए जा रहे हैं। नैतिक पतन उनके मन को ग्रसित करता जा रहा है। परिणामस्वरूप महिलाओं के खिलाफ अपराध और हिंसा बढ़ रही है। इसलिए, शोषणमूलक दमनात्मक पुरानी पूँजीवादी व्यवस्था में ही इसकी जड़ निहित है।

महिलाओं के खिलाफ अपराध में भारी बढ़ोतरी के प्रति सरकार का रवैया निस्संदेह भर्त्सना योग्य है। मात्र एक महीना पहले, दिल्ली में एक 23 वर्षीय लड़की के साथ हुए अत्यंत बर्बर सामूहिक बलात्कार और हत्या से पूरे देश में एक अभूतपूर्व उथल-पुथल मच गई थी। लोगों के आक्रोश के इस स्वत:स्फूर्त प्रचण्ड विस्फोट ने लोगों की भावनाओं को शांत करने के लिए कुछ करने की खातिर सरकार को मजबूर कर दिया। मुख्यत: दाण्डिक कानून के लिए सरकार ने वर्मा कमेटी का गठन किया था। लेकिन इससे पहले सरकार ने अंधाधुंध लाठीचार्ज करके, पानी की बौछारें मार कर और आंसू गैस के गोले दाग कर और बाद में परिवहन सेवा को स्थगित करके और मुख्य मार्गों में प्रवेश बंद करके दिल्ली में प्रदर्शन कर रहे लोगों को तितर-बितर करने के हर संभव प्रयास किए थे। लेकिन इससे न तो यह प्रदर्शनकारी जनता जिसमें भारी संख्या में नौजवान, विशेषकर युवतियाँ शामिल थीं, उनको हतोत्साहित कर सका और न ही प्रदर्शन पर ठण्डा पानी डाल सका। अंतत: सरकार को झुकना पड़ा और कमेटी गठित करनी पड़ी। निस्संदेह, कमेटी ने अपनी सिफारिशें तो दे दी हैं लेकिन खेद भी व्यक्त किया है कि सरकार की तरफ से इसे आवश्यक मदद प्राप्त नहीं हुई थी। एक कमरा आवंटित करने के सिवाय और कोई ढांचागत सहायता कमेटी को नहीं दी गई थी। इसलिए सरकार के रवैये को आप अच्छी तरह समझ सकते हैं। इसे एक कमेटी गठित करने के लिए मजबूर होना पड़ा लेकिन यह ऐसा कतई नहीं चाहती थी। कमेटी ने कुछ कदम उठाने की सिफारिश की है ताकि पुलिस-प्रशासन महिलाओं को कुछ इन्साफ दे सके। जो भी हो, यह अत्यावश्यक है कि महिलाओं पर अपराध के खिलाफ पुलिस चौकस रहे और अपराधियों को पकड़ने के लिए तथा उन पर उचित कानून के तहत मुकदमा चलाने के लिए तुरन्त आवश्यक कदम उठाए ताकि उन्हें सख्त से सख्त सजा दिलाई जा सके। लेकिन कृपया ध्यान में रखिए कि सिर्फ कानून बदलने या प्रशासन को कुछ चुस्त-दुरूस्त करने से ही महिलाओं के खिलाफ अपराध और हिंसा का उन्मूलन नहीं हो जाएगा। ऐसे अपराधों की बढ़ोतरी पर काबू पाने के लिए यह आवश्यक है कि सही सोच रखने वाले सचेत पुरुष समुदाय के साथ मिलकर महिलाएं एक सशक्त संगठित आन्दोलन का निर्माण करें। लेकिन महिलाओं पर इस अपराध और आक्रमण के उन्मूलन का सवाल तमाम बुराइयों की जड़ पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के सवाल के साथ ओत प्रोत रूप से जुड़ा हुआ है। याद रखिए, हमारे देश में और इस मामले में किसी भी अन्य पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देश में महिलाओं को बेरहम आर्थिक-राजनैतिक-सांस्कृतिक शोषण के अलावा एक और शोषण का सामना करना पड़ता है, वह है पितृसत्तात्मक समाज का शोषण। वे पितृसत्तात्मक उत्पीड़न और भेदभाव का शिकार बनती हैं। अत: महिलाओं को आन्दोलन के माध्यम से, बुर्जुआ सरकार के खिलाफ, शासक पूँजीपति वर्ग के खिलाफ जुझारू संघर्ष के विकास के माध्यम से और सिर्फ इसके ही जरिए जिस भयंकर उत्पीड़न का वे शिकार हैं उससे असल मुक्ति पाने में वे सक्षम होंगी। मेरे विचार से एआईएमएसएस सामाजिक अन्याय, सरकार और राज्यसत्ता द्वारा थोपे गए अन्यायों के खिलाफ संघर्ष संचालित करने के लिए लम्बे समय से महिलाओं को तैयार करने और संगठित करने में लगा हुआ है। एकमात्र यही महिला संगठन है जो मुक्ति का रास्ता दिखला सकता है। तमाम अन्य ऐसे संगठन, जो अक्सर महिलाओं के मुद्दों पर बात करते हैं और आन्दोलन का कुछ दिखावा करते हैं वे केवल अपने-अपने राजनीतिक आकाओं के लिए वोट बैंक तैयार करने में ही रूचि रखते हैं। वे महिलाओं की बराबरी में गंभीरता से यकीन नहीं करते हैं। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि गरिमा का सवाल पुरुषों की गरिमा के साथ भी समान रूप से जुड़ा हुआ है। एक समाज में जहाँ महिलाओं की गरिमा कलंकित और कत्ल होती है, वहीं पुरुषों की गरिमा भी समान रूप से कलंकित और कत्ल होती है।

इसलिए मेरी आप सभी से यह अपील है कि इस सम्मेलन से वापस जाने के बाद आपको उचित सचेत

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड माणिक मुखर्जी

आन्दोलन संगठित करना चाहिए। आपको महिलाओं को बताना चाहिए कि क्यों और कैसे उन्हें आन्दोलन में शामिल होना चाहिए, इस दमन-उत्पीड़न को खत्म करने के वांछित उद्देश्य को हासिल करने के लिए इसका कदम-ब-कदम निर्माण करना चाहिए और मैं तहेदिल से यकीन करता हूँ कि प्रतिनिधि सत्र में प्रतिनिधिगण साहस और दृढ़निश्चय के साथ समस्याओं का सीधा-सीधा मुकाबला करने का दृढ़ संकल्प लेंगी और जीवन की ज्वलंत समस्याओं पर देशव्यापी सशक्त जन आन्दोलन विकसित करने के लिए जी जान से जुट जाएंगी। मैंने देखा है और आप भी जानती हैं कि जब कभी किसी देश में न्यायसंगत जन आन्दोलन का उभार पैदा हुआ है, पुरुष समुदाय, नौजवान संघर्षशील भावना और शौर्य से ओत-प्रोत होकर अलग किस्म के इंसानों में परिणत हो जाते हैं। हमने देखा कि मिस्र के तहरीर चौक पर किस प्रकार निरंकुश शासन के खिलाफ अपने आन्दोलन को जीवंत बनाए रखने के लिए युवक-युवतियों ने एक साथ रात के बाद रात बिताई थी। लेकिन छेड़खानी की कोई घटना नहीं घटी या किसी लड़की के खिलाफ कोई अभद्र टिप्पणी तक नहीं की गई। यह आन्दोलन द्वारा पैदा किया गया वातावरण, एक सांस्कृतिक परिदृश्य है जो लम्पटता की नहीं, जीवन की भावना को पोषित करता है। पश्चिम बंगाल में नन्दीग्राम के ऐतिहासिक आन्दोलन के दौरान भी, जीवन के प्रति संघर्षरत नौजवानों के इस पूर्णत: अलग नजरिए को हमने देखा था। मैं जो दिखाने का प्रयास कर रहा हूँ वह यह है कि जब एक जायज उद्देश्य के लिए जायज संघर्ष उभरता है तो न केवल महिलाओं के प्रति अपराध या अभद्रता को रोकने के लिए बल्कि तमाम ऐसे सांस्कृतिक और नैतिक पतन के खिलाफ उच्च नीति-नैतिकता पर आधारित संघर्ष छेड़ने के अनुकूल वातावरण तैयार हो जाता है।

मैं ज्यादा समय नहीं लूँगा क्योंकि इसके बाद कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम होने हैं। लेकिन इस सम्मेलन के प्रति सरकार के रवैये का जिक्र में जरूर करूँगा। अमेरिका से एक बिरादराना महिला प्रतिनिधि को वीसा देने से इन्कार कर दिया गया। इसलिए वे नहीं आ सकीं और बांग्लादेश से प्रतिनिधियों को पर्यटक वीसा दिया गया इस शर्त पर कि वे सम्मेलन में भाग नहीं लेंगी, यहाँ तक कि मंच पर भी नहीं बैठेंगी। देखिए हमारी सरकार का और अमेरिका की सरकार का नजरिया। ऐसा नजरिया क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि यह एक अलग तरह का सम्मेलन है, एआईएमएसएस एक अलग तरह का संगठन है। एआईएमएसएस एक क्रान्तिकारी संगठन है और यह इस शोषणमूलक व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए लोगों को लामबंद कर रहा है। कॉमरेडों और दोस्तो, यहाँ मैं अपना भाषण समाप्त करूँगा। मैं आपसे अपील करता हूँ कि इस सम्मेलन से आपको आन्दोलन के कुछ प्रोग्राम लेने चाहिए और इस प्रकार आप इस संगठन को देश भर में फैला देंगे। मैं एआईएमएसएस के संगठकों को और यहाँ उपस्थित सभी लोगों को बधाई देता हूँ। इन शब्दों के साथ मैं समाप्त करता हूँ। आप सभी का धन्यवाद। ●

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 2 का शेष)

लेकिन इस धरती की एक और जानी-मानी हस्ती विवेकानन्द द्वारा स्थिति एकदम उलट दी गई। एक तरफ, उन्होंने राष्ट्रवाद का परचम बुलन्द किया जबकि दूसरी तरफ उन्होंने वेदांत का परचम बुलन्द किया और इससे, दरअसल उन्होंने विद्यासागर द्वारा छेड़े गए सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलन की प्रगति को बाधित कर दिया। अब मैं महिलाओं के आदर्श के तौर पर विवेकानन्द ने जो उपदेश दिया था उसका हवाला दे दूँ। शिक्षा के सवाल पर बोलते हुए उन्होंने कहा था कि भारत की महिलाओं को सीता के नक्शे-कदम पर चलना और विकसित होना होगा। सीता बेजोड़ है। वह बिल्कुल सच्ची भारतीय महिला का नमूना है, क्योंकि सीता के उसी एक जीवन में से ही एक परिपूर्ण महिला के सभी भारतीय आदर्श पनपे हैं।... उसमें वह सदा होगी ही, यह गौरवशाली सीता, खुद पवित्रता से भी पवित्र, समस्त सहनशीलता और समस्त व्यथा-वेदना है। ...हमारी महिलाओं को आधुनिक बनाने की कोई भी कोशिश अगर हमारी महिलाओं को सीता के उस आदर्श से दूर ले जाने की कोशिश करती है, तो वह फौरन एक बेकार कोशिश हो जाती है जैसा कि हम रोजाना देखते हैं।''(6) फिर, चलो आपको मैं इस सवाल पर प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नेता गाँधीजी के विचार पढ़कर सुनाता हूँ: ''पुरुष और महिलाएँ एक दूसरे के परिपूरक हैं। पुरुष बाहरी गतिविधियों में सर्वोच्च है और इसलिए उसे उनका ज्यादा ज्ञान होना चाहिए। घरेलू जीवन पूरी तरह से महिलाओं का क्षेत्र है और इसलिए घरेलू मामलों में, बच्चों के पालन-पोषण और शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं को ज्यादा ज्ञान होना चाहिए। जब तक शिक्षण के कोर्स इन बुनियादी सिद्धान्तों की सूक्ष्मदर्शी समझ के आधार पर न हों, तब तक नर और नारी का पूर्णतम जीवन विकसित नहीं किया जा सकता। साहसिक आचरण के लिए महिलाएं आज सीता और द्रोपदी से, सावित्री और दमयन्ती से ही शक्ति और मार्गदर्शन प्राप्त कर सकती हैं।''(7) अब मैं भारतीय नवजागरण के एक और बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्तित्व, रवीन्द्रनाथ को उद्धृत कर रहा हूँ। नारी-शिक्षा पर उनका कहना यह था: ''चूँकि महिलाओं की शारीरिक बनावट और मानसिक प्रकृति पुरुषों की शारीरिक बनावट व मानसिक प्रकृति से भिन्न है; इसलिए उनका कार्यक्षेत्र भी स्वाभाविक रूप से भिन्न है। विद्रोही किस्म की प्रवृत्ति से, महिलाओं का एक हिस्सा इस बुनियादी सच्चाई को मानने से इनकार करता है। वे दलील देती हैं कि पुरुषों और महिलाओं, दोनों की गतिविधियों के क्षेत्र एक समान होने चाहिएं। यह महज उनकी जमा हुई शिकवे-शिकायतों के इजहार के सिवाय और कुछ नहीं है। इन शिकवे-शिकायतों की वजह यह है कि पुरुष अपनी खुद की खास गतिविधियों की तलाश की प्रक्रिया में विभिन्न क्षेत्रों में हावी हो गए हैं। इसके विपरीत, महिलाएं ज्यादातर क्षेत्रों में पुरुषों की आज्ञाकारी रहने के लिए कृतज्ञ हैं। वे इस आज्ञाकारिता को अवश्यम्भावी नहीं समझती हैं। अगर पुरुष महिलाओं की नरम प्रकृति के खिलाफ अपनी शक्ति का प्रयोग करने के रास्ते उन्हें अंधविश्वासों में बांध कर अधीन बनाये रखते हैं, तो यह स्वीकारना ही पड़ेगा कि महिलाओं की गुलामी स्वाभाविक है। विचारणीय विषय यह है कि महिलाओं के लिए माँ और पत्नी बनना स्वाभाविक ही है। लेकिन गुलामी उनके लिए स्वाभाविक कभी नहीं हो सकती है। महिलाएं स्वभाव से ही बहुत स्नेहमयी होती हैं, कोमल भावनाओं वाली होती हैं। अगर वे ऐसी नहीं होती तो बच्चे नहीं पाले जा सकते थे, परिवार को एकजुट नहीं रखा जा सकता था। समाज ने महिलाओं के इस स्नेहशील स्वभाव को हमशा अहमियत दी है; इसलिए समाज के प्रति महिलाओं का दायित्व प्यार और स्नेह देने में ही निहित है। दूसरी तरफ, समाज ने पुरुषों की शारीरिक ताकत पर हमेशा जोर दिया है और इसलिए पुरुषों का दायित्व अपनी ताकत से समाज की रक्षा करने में निहित है।''(8) अब आप देखते हैं कि विवेकानन्द, गाँधीजी और रवीन्द्रनाथ ने विद्यासागर जिस बात में विश्वास करते थे उसके खिलाफ महिलाओं के बारे में एक जैसे ही विचार व्यक्त किए हैं। बाद में, ये क्रान्तिकारी मानवतावादी साहित्यकार शरतचन्द्र ही थे, जिन्होंने विद्यासागर के विचारों को आगे बढ़ाया और आगे विकसित किया। जहाँ विवेकानन्द, गाँधीजी और रवीन्द्रनाथ का दृष्टिकोण अध्यात्मवाद, धार्मिक व परम्परागत विश्वासों से नियंत्रित था, वहीं विद्यासागर और शरत्चन्द्र का नजरिया वैज्ञानिक, भौतिकवादी था। आजादी आन्दोलन में महिलाओं के भाग लेने के सवाल को केन्द्र करके आजादी आन्दोलन के समय एक बहस छिड़ गई थी। जहाँ रूढ़िवादी और परम्परावादी लोग आजादी आन्दोलन में महिलाओं की ऐसी किसी भागीदारी के खिलाफ थे, वहीं सुप्रसिद्ध गैरसमझौतापरस्त उपन्यासकार शरत्चन्द्र ने इसका जोरदार समर्थन किया था और कहा था, ''देश की आजादी के लिए जरूरी है कि पुरुषों और महिलाओं की मिलजुलकर पहलकदमी हो। वरना कुछ भी नहीं होगा। मैं जानता हूँ कि अगर लड़के-लड़कियाँ, दोनों ही एक साथ काम करने के लिए सामने आ जाएं, तो विभिन्न हलकों की तरफ से निन्दा की बौछार होगी। ऐसा करें तो करने दो। कुछ निन्दकों के जोर-शोर से चिल्लाने से क्या हम काम करना बंद कर दें? देश के लिए जो अपना तथाकथित नाम और यश नहीं छोड़ सकते वे कैसे यह दावा कर सकते हैं कि उन्होंने त्याग किया है?''(9) शरत्चन्द्र ने महिलाओं के लिए बहुत ही मूल्यवान सीख भी दी थी ताकि वे परम्परावाद की जंजीरों से अपने मन को मुक्त कर सकें। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'शेष प्रश्न' में इनकी चर्चा की गई है जिसमें उन्होंने कहा था: ''जीवन में विभिन्न घटनाओं में से विवाह भी एक है—उससे ज्यादा और कुछ नहीं है।''(10) उन्होंने आगे यह भी कहा था: ''जिन्होंने यह फरमान जारी किया कि पत्नियाँ केवल बच्चे पैदा करने के लिए हैं, उन्होंने महिलाओं के प्रति न केवल अपमान दिखाया बल्कि अपने खुद के विकास का भी रास्ता बंद कर दिया।''(11) 'पुत्रार्थे कृते भार्या' अर्थात् लड़का पैदा करने के लिए पत्नी की जरूरत है इस धारणा के खिलाफ भी वे जोरदार ढंग से लड़े थे। इस पर उन्होंने कहा था, ''जिन्होंने फुसलाने वाले शब्दों की रंग बिरंगी प्रचुरता के साथ गहने पहनाए और यह एलान किया कि जीवन की पूर्णता माँ बनने में है उन्होंने समस्त नारी समुदाय को धोखा दिया।''(12) जहाँ तक मेरी जानकारी है शरत्चन्द्र के ये उन्नत विचार पाश्चात्य नवजागरण काल के साहित्य में भी नहीं पाए जा सकते। आप जानती हैं कि महान मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष ने बड़ी सराहना के साथ शरत्चन्द्र का चरित्र-चित्रण भारतीय नवजागरण के एक शक्तिशाली गैर-समझौतापरस्त मानवतावादी चिन्तनकार के रूप में किया था और उन्हें समाजवादी क्रान्ति के चिन्तन के बहुत करीब पहुँचा हुआ पाया था। इसलिए आप देखती हैं कि भारतीय नवजागरण में दो एक दूसरे के बिल्कुल विरोधी रुझान थे। एक की वकालत विवेकानन्द, गाँधीजी, रवीन्द्रनाथ ने की थी, दूसरा विद्यासागर और शरत्चन्द्र द्वारा बुलन्द किया गया था। लेकिन पहले वाला रुझान हावी रहा क्योंकि हमारे राष्ट्रीय आजादी आन्दोलन का नेतृत्व भारतीय राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग द्वारा किया गया था। इसने निश्चित सामाजिक-राजनैतिक कारण से, सामन्तवाद और अध्यात्मवाद के प्रति एक समझौतापरस्त रवैया अपना लिया था। इसलिए उन्होंने विवेकानन्द, गाँधीजी और रवीन्द्रनाथ के विचारों का पृष्ठपोषण किया और उन्हीं को आगे लाए। उस समय एक सही मार्क्सवादी पार्टी मौजूद नहीं होने के कारण हमारे देश की सरजमीं पर कोई सर्वहारा क्रान्तिकारी आन्दोलन नहीं था। नकली मार्क्सवादियों या स्वयंभू कम्युनिस्टों ने विद्यासागर और शरत्चन्द्र के विचारों पर जोर नहीं दिया। नतीजतन ग्रामीण अनपढ़ अशिक्षित जनसाधारण की तो बात छोड़ो, यहाँ तक कि शहर-आधारित शिक्षाविदों के बीच भी हावी भारतीय मानसिक गठन को विवेकानन्द, गाँधीजी और रवीन्द्रनाथ की शिक्षाओं और उपदेशों के साथ मेल खाते हुए ढाल दिया गया। महिलाओं के प्रति शिक्षित लोगों तक का रुख-रवैया तय करने के पीछे उसी ने काम किया।

मौजूदा भारत में भी कोई अलग आलम नहीं है

यह हम आज तक भी देख रहे हैं। मैं भारतीय आजादी आन्दोलन के राजनैतिक सवाल को नहीं छू रहा हूँ। मैं केवल एक पहलू को ही दिखाना चाहूँगा। अगर उस समय एक सही मार्क्सवादी नेतृत्व उभर कर आ गया होता तो हालात कुछ और ही होते। वह नेतृत्व विद्यासागर और शरत्चन्द्र का धर्म-निरपेक्ष मानवतावादी परचम बुलन्द कर सका होता और उस रुझान की धाराबाहिकता में युग परिवर्तन की वजह से उसमें आवश्यक विच्छेद लाने पर और भी ज्यादा उन्नत सर्वहारा संस्कृति को जन्म दे सका होता। यह बाद में चलकर हुआ जब लाखों लाख शोषित-पीड़ित मजदूर-किसानों, आम लोगों और महिलाओं के आँसुओं और गहरी आहों ने सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष में मूर्त रूप लिए हुए असली मार्क्सवादी नेतृत्व को जन्म दिया। यह कॉमरेड शिवदास घोष ही थे जिन्होंने इस युग की सबसे ज्यादा क्रान्तिकारी विचाराधारा, मार्क्सवाद-लेनिनवाद को ग्रहण किया, इसे हमारे देश की ठोस परिस्थिति और साथ ही तत्कालीन ठोस अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में सही और ठोस रूप में लागू किया और इस प्रक्रिया में मार्क्सवाद-लेनिनवाद को आगे और भी विस्तार से प्रतिपादित, विकसित और समृद्ध किया और इसकी समझ को एक नई बुलन्दी पर ले आए जिसे हम कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा कहते हैं। उन्होंने सर्वहारा संस्कृति और नीति-नैतिकता की भी सर्वाधिक उन्नत धारणा प्रदान की। मार्क्सवाद के आधार पर कॉमरेड शिवदास घोष ने भारतीय महिलाओं को खुलासा करके बताया कि, ''समाज एक समय मातृसत्तात्मक भी था। जब कृषि के चालू होने के पीछे-पीछे निजी सम्पत्ति का सवाल उभरकर आया तो समाज पितृसत्तात्मक हो गया। कृषि चालू हो जाने के बाद, पुरुष उत्पादन और श्रम विभाजन पर अपना आधिपत्य कायम करने में सक्षम थे। ...तभी से महिलाओं का दमन-उत्पीड़न शुरू हो गया। ...उस समय, पुरुष और महिलाएं एक लम्बे अर्से तक एक दूसरे के खिलाफ जम कर लड़े। यह लड़ाई समाज में पुरुष प्रधानता का आधिपत्य स्वीकारने के लिए महिलाओं को मजबूर कर देने के ख्याल से चलती रही। लेकिन समय गुजरने के साथ-साथ महिलाओं को ऐसे आधिपत्य के आगे झुक जाना पड़ा।''(13) फिर उन्होंने एक बात और कही थी : ''पुरुष और महिलाएं दोनों से ही मानव समाज बनता है। इसलिए सामाजिक प्रगति, सामाजिक विकास और सामाजिक क्रान्ति के लिए संघर्ष में, जिस तरह पुरुषों की भूमिका है, उसी तरह महिलाओं को भी बराबर भूमिका अदा करनी है।... इस क्रान्ति में, अर्थात् पूँजीवादी आधिपत्य और शोषण दोनों से ही आजादी पाने में पुरुषों और महिलाओं, दोनों की मुक्ति निहित है। दोनों को ही इस संघर्ष में समान रूप से शामिल होना है। यह हर तबके की महिलाओं-मध्यम वर्गीय महिलाओं, किसान महिलाओं और मजदूर वर्ग की महिलाओं के लिए मुक्ति है। आप अपनी पूरी ताकत से इस संघर्ष में शामिल हों। एकमात्र यही मुक्ति का वास्तविक रास्ता है। इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है।''(14) यह है कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा प्रदान की गई गाइडलाइन, मैं यहाँ आपको कोई गाइडलाइन देने के लिए नहीं हूँ जैसा कि आपके नेताओं द्वारा सुझाव दिया गया। मैं कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा जो गाइडलाइन दी गई थी उसी के आधार पर बोल रहा हूँ। हमारे देश में पहली बार, उन्होंने नारी-मुक्ति संघर्ष के लिए गाइडलाइन दी थी। लेकिन उन्होंने एक चेतावनी भी दी थी। उन्होंने कहा था, ''पुरुष प्रधान समाज के विधि-विधानों का पालन करने की प्रक्रिया में, महिलाएं आज एक ऐसे दोराहे पर आ पहुँची है कि वे न केवल उनकी आदी हो गई हैं बल्कि ये धर्ममत और शब्दावली अंधविश्वासों के रूप में महिलाओं के जीवन के अभिन्न अंग बन चुके हैं। आज, महिलाएं खुद उन कुसंस्कारों की शिकार बन चुकी हैं। इसलिए अक्सर पाया जाता है कि बहुत से पहलुओं में, महिलाएं खुद महिलाओं की आजादी की विरोधी हैं।''(15)

महिलाएं दकियानूसी विचारों से ग्रसित हैं

यह क्यों हो रहा है? यह इसलिए हो रहा है कि भारतीय नवजागरण का जो रुझान हावी था उसने धर्म के साथ समझौता कर लिया था और ये सब धर्मग्रंथ, पौराणिक कहानियाँ इस तरह से रची गई हैं मानो महिलाएं गुलामों की तरह पुरुष की सेवा करने के लिए ही पैदा हुई हों और उनके उद्धार के लिए उनके पास यही एकमात्र उपाय हो। हजारों हजार साल से दास प्रथा वाले समाज से लेकर सामन्तवाद से पूँजीवाद तक पितृसत्तात्मक समाज महिलाओं पर हावी रहा है। और हजारों साल से महिलाओं को खुशी के साथ इसे सहते जाने की शिक्षा दी गई है। माताएं और दादी-नानियाँ अपनी बेटियों और पोति-दोहतियों को इसी लाइन पर शिक्षित करती आ रही हैं। अगली पीढ़ी भी अपनी बारी पर इसी के अनुसार अपनी बेटियों को शिक्षित कर रही है। यह शिक्षा एक लड़की को ठीक शुरूआती बचपन से ही शुरू हो जाती है। एक लड़की को बताया जाता है कि आखिर वह एक महिला है उसे शादी करनी होगी और उसके जीवन में एक पति आएगा। इसलिए वह ऐसे-वैसे नहीं चल सकती, जैसा उसे पसन्द है वैसा बोल नहीं सकती या वैसा आचरण नहीं कर सकती, यहाँ तक कि खुश होने पर खिलखिलाकर हँस तक नहीं सकती। उसे खुद को सिर्फ अपने पति की पसन्द-नापसन्द को मान कर चलने के लिए मंजी हुई एक आज्ञाकारी सेवा करने वाली पत्नी बनने के लिए तैयार होना है।

उसे सिर्फ माँ बनना है और वह भी लड़कों की माँ, न कि लड़कियों की। बेटों का स्वागत किया जाता है, बेटियों का नहीं। लड़की यह सोचने की भी आदी है कि अगर उसकी शादी नहीं हुई तो उसकी गति नहीं होगी, उसका

(शेष पृष्ठ 6 पर)

स्कूली छात्रा के साथ हुए दुष्कर्म पर रोष प्रदर्शन

दिल्ली: मंगोलपुरी में स्कूली छात्रा के साथ हुए दुष्कर्म ने एक बार फिर से दिल्ली की सड़कों पर उतर कर आम जनता ने भारी रोष जताया। इस जघन्य काण्ड की निन्दा करते हुए ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन, छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ और युवा संगठन ऑल इण्डिया डीवाईओ ने 2 मार्च को जन्तर मन्तर पर संयुक्त विरोध प्रदर्शन किया।

ऑल इण्डिया एमएसएस की ओर से कॉ. ऋतु कौशिक, पुष्पा चमोली, सीता देवी व नीतू खन्ना, ऑल इण्डिया डीएसओ की ओर से कॉ. प्रशांत कुमार, राहुल सरकार व मो. आसिफ एवं ऑल इण्डिया डीवाईओ की ओर से कॉ. प्रकाश, अमरजीत व प्रभाष ने सभा को सम्बोधित किया।

वक्ताओं ने इस जघन्य काण्ड की निन्दा करते हुए बताया कि आज समाज किस नैतिक पतन की ओर अग्रसर है। यह बड़े ही शर्म की बात है कि आज समाज

में मासूम बच्चियाँ अपने स्कूलों में भी सुरक्षित नहीं हैं। उन्होंने मंगोलपुरी में प्रदर्शकारियों पर किए गए पुलिस लाठी चार्ज की भी तीव्र निन्दा की। प्रदर्शन में कई इलाकों एवं कॉलेज के छात्रों ने भाग लिया। मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन में इस घटना के दोषी को ढूंढ निकालने एवं सख्त से सख्त सज़ा की माँग की गई। सभा का संचालन कॉ. राहुल सरकार ने किया।

दिल्ली विश्व विद्यालय में शिक्षा सम्मेलन आयोजित

दिल्ली वि.वि. (दिल्ली): ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. की दिल्ली राज्य कमेटी ने 27 फरवरी को दिल्ली विश्वविद्यालय में तरह-तरह के शैक्षणिक सुधारों की पहल के खिलाफ सम्मेलन किया। ये तथाकथित सुधार चार साल का कोर्स, मेटा कॉलेज, मेटा यूनिवर्सिटी और क्रेडिट आधारित स्नातक की पढ़ाई को लेकर हैं। आर्ट्स फैकल्टी के लॉन में आयोजित इस सम्मेलन में विभिन्न कॉलेजों के छात्र-शिक्षक शामिल हुए।

सम्मेलन में आयोजित परिचर्चा में डॉ. आर. के. सरीन, नन्दिनी दत्ता, रवीन्द्र गोयल, प्रवीण कुमार, सुब्रतो गौरी और प्रताप सामल आदि ने भाग लिया और शिक्षा में तथाकथित सुधार की उन खामियों की ओर ध्यान दिलाया जो छात्रों के भविष्य पर सवालिया निशान लगाएंगे। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में संकट ला देंगे जो बड़ी संख्या में छात्रों को शिक्षा से वंचित कर देगा। वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा में निजीकरण और बाजारीकरण की नीति को अमली जामा पहनाने के लिए प्रशासन ऐसे कदम उठा रहा है। सम्मेलन में इग्नू के समकुलपति प्रोफेसर पी.आर. रामानुजम का संदेश आखिर में पढ़ा गया। अपने संदेश में उन्होंने भारतीय शिक्षा व्यवस्था की उन खामियों का जिक्र किया जो बाजार के लिए प्रशिक्षित कर्मी तो तैयार करेगा पर उनमें मानवता की चिन्ता नहीं होगी।

मनमाने बिजली बिलों के खिलाफ रोष जताया

ग्वालियर (म.प्र.): पिछले कुछ समय से आंकलित खपत और पिछला बकाया बताते हुए गरीबों और झुग्गीवासियों को अत्यधिक बढ़ी हुई राशि यानी लाखों रुपये के बिल दिए गए। बिल वसूलने और न दिए जाने पर बिजली कनेक्शन काटने की अपनी जिम्मेदारी में असफल रहने पर बिजली कम्पनी द्वारा 10-10 साल के बिल इकट्ठा जोड़कर 50 हजार से 8 लाख रुपए तक के बिल गरीबों को थमा दिए गए। इसके विरोध में 23 फरवरी को ग्वालियर के विभिन्न क्षेत्रों से सैकड़ों प्रदर्शनकारी एसयूसीआई(सी) पार्टी के नेतृत्व में जयेन्द्रगंज पर इकट्ठा हुए और वहाँ से मुख्य रैली बनाते हुए अपने हाथ में मांगों की तख्तियाँ लिए नारे लगाते हुए रोशनीघर पहुँचे। बिजली कम्पनी के महाप्रबंधक श्री टी. के. तिवारी को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में बिजली की आंकलित खपत के नाम पर गरीब बस्तियों में लाखों रुपये के दिए गए बिलों को वापस लेने, अन्य रीडिंग के बिल भी आसान किश्तों में वर्तमान बिलों के साथ चुकाने का प्रावधान करने, पुराना बकाया खत्म कर सभी को नए कनेक्शन देने, रियायती दरों पर बिजली देना सुनिश्चित करने, तथाकथित बिजली चोरी के सभी मुकदमें वापिस लेने की माँग की गई।

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल मुख्य वक्ता थे। उन्होंने लोगों से बिजली कम्पनियों की तानाशाही और निजीकरण के खिलाफ बड़ा आन्दोलन संगठित करने की अपील की। पार्टी के ग्वालियर जिला प्रभारी कॉ. सुनील गोपाल ने कहा कि ये माँगें यदि नहीं मानी गई तो यह आन्दोलन लगातार जारी रहेगा। श्रीमती सुनीता जैन, श्री किशन लाल, अनीता पराशर, अखिलेश तोमर, जितेन्द्र जैन व कुमार बाबू आर्य ने भी अपने वक्तव्य रखे। जनसभा का संचालन पार्टी की ग्वालियर जिला कमेटी के सदस्य कॉ. रूपेश जैन ने किया।

मध्य प्रदेश में एसयूसीआई(सी) का धरना

15 फरवरी को मध्य प्रदेश के गुना शहर में बिजली दर वृद्धि, पानी के निजीकरण और शिक्षा-स्वास्थ्य के निजीकरण के खिलाफ एसयूसीआई(सी) ने धरना दिया। जिला सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉमरेड लोकेश शर्मा ने अपने वक्तव्य में केन्द्र की कांग्रेस सरकार और राज्य की बीजेपी सरकार की जन-विरोधी नीतियों की कड़ी आलोचना की।

27 फरवरी–शहीद चन्द्रशेखर आजाद के शहीदी दिवस पर डीवाईओ द्वारा अशोकनगर, (म. प्र.) में साइकिल रैली

'रेप गेम्स' पर रोक लगाओ
—ए.आई.एम.एस.एस.

ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) की महासचिव डॉ. एच.जी. जयालक्ष्मी ने 23 फरवरी को जारी एक बयान में कहा, 'बलात्कार गेम्स' शीर्षक वाले वीडियो गेम्स पर पाबन्दी लगाने के लिए पश्चिम बंगाल राज्य सरकार को दिये राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के सचिव श्री सुजय कुमार के सुझाव और सरोकार का ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की ऑल इण्डिया कमेटी स्वागत करती है।

जापान से चला यह गेम खिलाड़ियों को जो या तो बच्चे हैं या कमसिन उम्र के तरुण है, एक महिला और उसकी दो बेटियों से बलात्कार करने की चुनौती पेश करता है। अपनी यह उत्कण्ठा व्यक्त करते हुए कि ऐसे गेम्स बच्चों और तरुणों में हिंसा को बढ़ावा देंगे, उन्होंने गृह सचिव को दिशा निर्देश दिया है कि सूचना तकनीकी कानून का इस्तेमाल करते हुए ऐसे गेम्स पर पाबन्दी लगाई जाए और इस बाबत एक रिपोर्ट 4 हफ्ते में दाखिल की जाए। वे कहते हैं कि सूचना तकनीकी कानून 2000 की धारा 67 के मुताबिक जो कोई व्यक्ति ऐसे गेम्स तैयार करता है उसे कम से कम 10 साल की सजा हो सकती है।

मीडिया की रिपोर्ट है कि इस गेम पर अर्जेन्टीना, मलेशिया, थाईलैण्ड आदि में पाबन्दी लग चुकी है जबकि भारत और कई अन्य देशों में यह आसानी से और खुले आम उपलब्ध है।

एआईएमएसएस केन्द्र सरकार से जोरदार अग्रह करता है कि यह एक नजीर है और देश भर में ऐसे गेमों पर पाबन्दी लगानी चाहिए जो युवा पीढ़ी को अपराधियों में तब्दील कर रहे हैं और महिलाओं पर अपराधों की ओर प्रवृत्त कर रहे हैं।

छात्र आन्दोलन की जीत

गुना (म.प्र.): क्र-2 विद्यालय गुना के कामर्स संकाय के 31 छात्र अब प्राइवेट नहीं, बल्कि नियमित बोर्ड परीक्षा ही देंगे। यह आश्वासन जिला शिक्षा अधिकारी व स्कूल प्रशासन ने दिया। शासकीय नियम की सरासर अवेहलना करते हुए स्कूल प्रशासन व कक्षा अध्यापक द्वारा इन छात्रों को ट्यूशन लगाने पर जोर दिया जाता था जिसकी नाफरमानी के चलते छात्रों को नियमित बोर्ड परीक्षा के अयोग्य करार दिया गया था। 4 दिन से पीड़ित छात्र अपनी जायज मांगों को लेकर डी.एस.ओ. के नेतृत्व में आन्दोलनरत थे। जब प्रशासन ने कोई ठोस जवाब नहीं दिया तो छात्रों ने गुना क्षेत्र के विधायक व स्कूल शिक्षा मंत्री को अपनी मांग से अवगत कराया।

ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. के जिला उपाध्यक्ष कॉ. योगेश धाकड़ ने छात्र आन्दोलन की जीत होने पर समस्त छात्र व आन्दोलन प्रेमी जनता को बधाई दी और अपील की कि सभी छात्र अपनी मांगों को लेकर संगठित होकर जोरदार आन्दोलन चलाएंगे तो निश्चित ही आन्दोलन विजयी होगा।

परिचर्चाओं का आयोजन

जबलपुर (म.प्र.): महिलाओं पर बढ़ते अपराध-अत्याचारों के विरोध में 17 फरवरी को ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की जबलपुर जिला समिति ने गोकलपुर स्कूल प्रांगण में एक कन्वेंशन आयोजित किया। कन्वेशन में महिलाओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। कन्वेंशन की अध्यक्षता श्रीमती चन्द्रा पात्रा ने की। महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों के विरोध में एक प्रस्ताव कु. राखी बेन ने पेश किया। सरिता झा एवं गोदावरी बलैया ने प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। सभा की मुख्य वक्ता संगठन की म.प्र. राज्य संयोजिका कॉ. रचना अग्रवाल और जिला सांगठनिक समिति की अध्यक्षा कॉ. चन्द्रा पात्रा ने एआईएमएसएस को मजबूत करने का महिलाओं से आह्वान किया। सभा का संचालन कुसुमलता साहू ने किया एवं एक गीत प्रस्तुत किया। कु. श्वेता कनौजिया ने एक जोशीली कविता पेश की। अंत में आठ सदस्यीय गोकुलपुर वार्ड समिति का गठन हुआ। कसुमलता साहू को अध्यक्षा एवं सरिता झा को सचिव चुना गया। 18 फरवरी को जबलपुर सेण्ट एलायसिस कॉलेज व महिला पॉलीटेक्नीक इंस्टिट्यूट में भी परिचर्चाएं आयोजित की गई। जिनका संचालन म.प्र. राज्य संयोजिका कॉ रचना अग्रवाल ने किया।

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 4 का शेष)

भविष्य अंधकारमय है। दूसरी तरफ, उसके लिए अविवाहित रहना भी बहुत मुश्किल है क्योंकि उसे अपने रिश्तेदारों और सखी सहेलियों से सवालों का सामना करना पड़ेगा जैसे कि खासकर जब वह बूढ़ी हो जाएगी, उसकी तबियत खराब हो जाएगी तब उसकी देखभाल कौन करेगा? तब उसका भविष्य क्या होगा? उसके वैवाहिक जीवन में अगर वह एक बच्चे, खासकर एक लड़के की माँ नहीं बन पाई तो, उसे बांझ कह कर जलील, बेइज्जत किया जाएगा, उस पर जुल्म ढाया जाएगा और यहाँ तक कि उसका कत्ल भी कर दिया जाएगा। कभी-कभार कोई-कोई महिला अगर पाती है कि उसका वैवाहिक जीवन पूरी तरह नाकाम है और वह माँ बनने के लायक नहीं है तो वह पागल भी हो जाती है, यहाँ तक कि खुदकुशी भी कर लेती है। भले ही चाहे कोई-कोई महिला एक शिक्षक या डाक्टर के तौर पर, वैज्ञानिक या अर्थशास्त्री के तौर पर या राजनीतिज्ञ के तौर पर सफल भी हो–ये उपलब्धियाँ उसके और दूसरों के द्वारा तब तक बेकार समझी जाती हैं जब तक कि वह पत्नी या माँ नहीं बन जाती। वह महसूस करती है कि उसका नारीत्व अपूर्ण है। यह मानसिकता व्याप्त है। हजारों सालों से ऐसे विश्वास महिलाओं के रोम-रोम में, कोशिकाओं, खून, मांस और हड्डियों में कूट-कूट कर भरे हुए हैं, ऐसे रस्मो रिवाज और आदतें उनके जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। सहज प्रवृत्ति से वे इस तरह महसूस करती हैं। ऐसी लोक कथाओं, गीतों और नाटकों की कोई कमी नहीं है जो महिलाओं को ऐसे विचारों का पाठ पढ़ाते हैं, इस तरह के नारीत्व की जयजयकार करते हैं और इस प्रकार महिलाओं को ऐसे मानसिक गठन तक ही सीमित रहने की शिक्षा देने की चेष्टा करते हैं।

जंजीरों को तोड़ना होगा

इसलिए, इन जंजीरों को तोड़ने के लिए गंभीर सैद्धान्तिक-सांस्कृतिक संघर्ष जरूरी है। आप महज प्रस्ताव पारित करके, पुस्तिकाएं प्रकाशित करके या मंच से भाषण देकर ही इस गुलामी की मानसिकता से महिलाओं को मुक्त नहीं कर सकती। ऐसे में नारी मुक्ति के लिए संघर्ष छेड़ने और चलाने के लिए प्रगाढ़ सूझबूझ, गहरे ज्ञान, बेहद धैर्य, सतत परिश्रम और कला-कौशल जरूरी हो जाता है। भारत एक बहुत विशाल देश है। आपको लाखों-लाख महिलाओं को शिक्षित करना है। दूसरों को शिक्षित करने से पहले आपको खुद को शिक्षित करना होगा। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विज्ञान की सबसे उन्नत समझदारी, कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा को सही तौर पर गहराई से समझे बिना आप यह दृष्टिकोण नहीं अपना सकती। कॉमरेड शिवदास घोष ने पुरुषों को भी यह याद दिलाया था कि अगर अपनी पत्नियों को जंजीरों में जकड़ कर रखा तो वे खुद भी मुक्त नहीं हो पाएंगे। पितृसत्तात्मक मानसिकता से मुक्त हुए बिना कोई आदमी कम्युनिस्ट नहीं बन सकता। यह भी एक बहुत कठिन संघर्ष है। शादी के बाद एक आदमी सोचता है कि उसकी पत्नी उसकी सम्पत्ति है। पत्नी भी समझती है कि चूँकि वह अपना तन-मन और सर्वस्व अपने पति को अर्पण कर चुकी है, इसलिए वह उसकी सम्पत्ति बन गई है। ये विचार व्याप्त हैं कि महिलाएं गुलामों की तरह घर के अन्दर, रसोईघर, शयनकक्षों में बच्चों की देखभाल तक ही सीमित रहें। कुछ एक दिनों पहले, हिन्दू कट्टरपंथी आरएसएस के प्रमुख मोहन भागवत ने दिल्ली की 23 वर्षीय लड़की के जघन्य बलात्कार पर टिप्पणी करते हुए यही मानसिकता व्यक्त की थी। उनके अनुसार शहरों और कस्बों में महिलाएं लक्ष्मण रेखा पार करके अर्थात् परम्परागत विचारों और पाबन्दियों की सीमा पार करके खुद ही अपनी समस्याओं को न्यौता दे रही हैं। ग्रामीण महिलाओं के साथ ऐसा नहीं होता है जिसे वे भारत कहते हैं। दूसरे शब्दों में, अगर उन्होंने पुरुष प्रधान समाज द्वारा थोपी हुई घरेलू घेराबन्दी की बाऊण्डरी लाइन पार करने की जुर्रत की तो महिलाओं के साथ बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, छेड़छाड़ और यहाँ तक कि उनका कत्ल तक भी हो सकता है। मानो घर में बिठा दी गई या गाँवों में रहने वाली महिलाएँ, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, छेड़छाड़, यातना और घरेलू हिंसा की शिकार नहीं होती हों। इस मानसिकता को बदलने और निहित स्वार्थ के ऐसे तमाम बुरे विचारों को करारी शिकस्त देने के लिए एक तीव्र कष्टसाध्य सैद्धान्तिक व सांस्कृतिक संघर्ष निहायत जरूरी है। इसलिए हमें महिलाओं में से अच्छे सिद्धान्तकारों, योग्य प्रचारकों और अच्छे संगठकों की जरूरत है। आपको सौन्दर्यबोधक शैली में अपने विचारों का प्रचार-प्रसार करने के लिए नाटक पेश करने चाहिएं, गीत रचने चाहिएं। आपको ग्रामीण महिलाओं को उनकी अपनी भाषा में शिक्षित करना पड़ेगा। आप जीवन से धार्मिक नजरिए को इतनी आसानी से दूर नहीं कर सकती। एक लम्बी सैद्धान्तिक-सांस्कृतिक लड़ाई जरूरी है। जब तक वर्ग-संघर्ष है, जब तक समाज शासक और शासित में, शोषक और शोषित में बंटा हुआ है, शासकों के विचार छाए रहेंगे। जब तक इन्सान अपने भाग्य विधाता खुद नहीं बनेंगे, यह कहावत कि 'इन्सान की नहीं, भगवान की मर्जी चलती है' उन्हें अपनी गिरफ्त में जकड़े रहेगी; जब तक प्रकृति के सभी रहस्यों को उजागर करने और सामाजिक क्रान्ति और प्रगति के इतिहास को सही-सही समझने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लोग प्रबुद्ध नहीं होंगे; तब तक अति प्राकृतिक सत्ता में विश्वास, प्रकृति के पीछे एक अदृश्य हाथ काम कर रहा है यह विश्वास और सब कुछ पूर्व निर्धारित है यह विश्वास अस्तित्व से नहीं जाएगा। इसी तरह, जब तक जीवन नरक जैसा रहेगा, असहनीय दु:ख-तकलीफों और दुर्दशा से भरा रहेगा, तब तक एक तरह की सांत्वना के तौर पर परलोक में एक ऐसी जगह जहाँ जीवन के सभी कष्टों और कलेशों से मुक्ति तथा खुशियों से भरपूर होने की कल्पना की गई है, उस स्वर्ग में एक रहस्यात्मक विश्वास और वहाँ से बुलावा आने का भ्रामक संकेत करता रहेगा। केवल समाजवादी क्रान्ति ही ऐसे धार्मिक चिन्तनों के पनपने के वस्तुपरक आधार का उन्मूलन सहज करेगी।

महिलाओं की मुक्ति पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने के साथ जुड़ी हुई है

यह वर्ग-विभाजित व्यवस्था धार्मिक चिन्तन की प्रजनन भूमि है। दूसरी तरफ, इस आवश्यक सैद्धान्तिक-सांस्कृतिक संघर्ष के साथ मिलाकर अगर आप जनआन्दोलन शुरू कर पाई तो आप इन अबलाओं समेत हजारों-हजार लोगों को सही ढंग से शिक्षित करने में सक्षम होंगी। इस दमनात्मक पुरुष प्रधानता के खिलाफ यह एक विरोधी शक्ति के तौर पर, एंटी-थीसिस के तौर पर काम करेगा। पुरुष प्रधान समाज के उन्मूलन की प्रक्रिया पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने और समाजवाद कायम करने के साथ शुरू होगी। हालाँकि समाजवाद के तहत, महिलाएं आर्थिक और राजनैतिक तौर पर समान होंगी, फिर भी ऊपरी ढाँचे के क्षेत्र में पुरुष प्रधान मानसिकता के अवशेष बचे रह जाएंगे। इसलिए समाजवाद में भी ऐसी मानसिकता के अन्तिम बचे-खुचे अवशेषों तक का भी सफाया कर देने के लिए गंभीर दृढ़निश्चयी सांस्कृतिक और सैद्धान्तिक संघर्ष चलाना जरूरी है। इस संघर्ष के सतत संचालन की प्रक्रिया में समाजवाद जितनी प्रगति करेगा उतनी ही तेजी से ऊपरी ढाँचे में बची-खुची पुरुष प्रधानता को दूर कर दिया जाएगा। अन्ततः जब साम्यवाद की अवस्था में पहुँच जाएंगे तब पुरुष प्रधान दृष्टिकोण का पूरी तरह खात्मा हो जाएगा। जो नारीवादी आन्दोलन की समर्थक हैं वे भी महिलाओं की मुक्ति की बात करती हैं। लेकिन वे इस बात को नजरअंदाज कर देती हैं कि यह पुरुष प्रधान समाज आकस्मिक तौर पर नहीं उभर कर आया बल्कि उत्पादन की एक खास अवस्था पर पहुंचकर उत्पादन व्यवस्था के विकास क्रम में आया। जैसे कि मैंने पहले बताया, जब समाज वर्ग-विभाजित हो गया, तो मातृसत्तात्मक समाज को हटाकर उसकी जगह पितृसत्तात्मक समाज आया और यह तब तक कायम रहेगा जब तक कि वर्ग-विभाजन का उन्मूलन नहीं हो जाएगा। इसलिए वर्ग-संघर्ष को नजरअंदाज करके, अटल सामाजिक नियमों की अनदेखी करके और पुरुषों के खिलाफ नारेबाजी करके पुरुषों को जो विशेषाधिकार-सुविधाएं प्राप्त हैं उन्हें सांझा करने के लिए बहस-मुबाहिसे, सेमिनार करके महिला मुक्ति कोई हासिल नहीं कर सकता। पुरुषों को यह समझना चाहिए कि महिलाओं की मुक्ति के बिना, उनकी खुद की मुक्ति भी उनसे कन्नी काटती रहेगी। इसलिए मजदूर-किसानों की मुक्ति, पूरे समाज की मुक्ति महिलाओं के मुक्ति-संघर्ष के साथ जुड़ी हुई है। पुरुषों और महिलाओं को यह संघर्ष मिलजुलकर चलाना होगा। संघर्ष को पुरुषों के खिलाफ नहीं, बल्कि पूँजीवादी व्यवस्था के खिलाफ दिशा-निर्देशित करना होगा। इसलिए महिलाओं की न्यायोचित माँगों के लिए, महिला-मुक्ति के लिए जनवादी आन्दोलन विकसित करते समय मुख्य उद्देश्य पूँजीवाद के खिलाफ क्रान्तिकारी आन्दोलन को मजबूत करना होना चाहिए।

एआईएमएसएस की नेता-कार्यकर्ताओं के जरूरी काम

अगला बिन्दु आता है पीड़ित महिलाओं को इस संघर्ष में संगठित करने का। विभिन्न श्रेणियों की महिलाएं हैं, शहरों व कस्बों की पढ़ी-लिखी महिलाएं हैं और झुग्गीबस्तियों व गांवों की अनपढ़ महिलाएं हैं। शहरों में पढ़ी-लिखी महिलाएं या तो पूरी तरह घर के कामकाज में लगी हुई हैं, नहीं तो ऑफिसों या संस्थानों में काम करने के साथ-साथ घर-गृहस्थी के भी कामकाज देखने की दोहरी जिम्मेदारियां निभा रही हैं। हम देखते हैं कि गरीब महिलाएं, चाय बागानों, कपड़े की फैक्टरियों, निर्माण कार्यों, खदानों और कृषि के क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं के रूप में काम कर रही हैं। निस्संदेह, महिलाओं के तौर पर वे कुछ साझी समस्याओं का सामना करती हैं। हमारे नेताओं, संगठकों को उन खास समस्याओं का बारिकी से अध्ययन करना चाहिए। उन समस्याओं का समाधान खास तौर पर और खास तरीके से किया जाना चाहिए। मध्यम वर्गीय परिवारों से आने वाली पढ़ी-लिखी कॉमरेडों को पेटि-बुर्जुआ मानसिकता और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के चलते खुद को उनसे अलग नहीं रखना चाहिए जो झुग्गीबस्तियों और ग्रामीण जीवन से आ रही हैं। अन्य सम्बन्धित संघर्षों के साथ-साथ उनके वर्गच्युत होने की प्रक्रिया की शुरूआत का यह भी एक हिस्सा है। बेझिझक, खुशी-खुशी इसे करिये और झुग्गीबस्तियों की महिलाओं से मेलजोल करिये। जो महिलाएं घरेलू नौकरानी के तौर पर काम करती हैं उनसे आपको अपनी बहनों की तरह प्यार करना चाहिएं अगर आप अपने मन में कुछ दिक्कत महसूस करती हैं तो इस पेटि-बुर्जुआ मानसिक जटिलता को दूर करिये। मध्यम वर्गीय महिलाओं में एक तरफ धार्मिक अंधविश्वासों का बोलबाला है वहीं दूसरी तरफ, बुर्जुआ व्यक्तिवाद, ठाटबाट के जीवन की लालसा, उपभोक्तावाद, अति-आधुनिकता व्यापक रूप में व्याप्त है। जब आप उनके बीच काम करेंगी, तब अगर आप सांस्कृतिक रूप से तैयार और सही तरह से पारंगत न हों तो अनजाने में आप भी उनसे प्रभावित हो जा सकती हैं। वे मध्यम वर्गीय ढुलमुलपन, अवसरवाद, कैरियरिज्म से ग्रसित होती हैं। गरीब महिलाओं के बीच धार्मिक रीति-रिवाजों, परम्पराओं, जातिवाद का बोलबाला है। लेकिन वे अपने संघर्ष में एकसाथ मिलकर काम करती हैं, इसलिए उन्हें एकजुट करना सापेक्षतः आसान है। एआईएमएसएस को तमाम तबकों की उत्पीड़ित महिलाओं के पास कार्यकर्ताओं को भेजना चाहिए। आपको मुक्ति के लिए साझे संघर्ष में उन सबको जुटाना है, संगठित और शिक्षित करना है। मैं फिर दोहराता हूँ कि सभी महिलाओं की कुछ समस्याएं साझी हैं। लेकिन साथ ही विविधताएं, भिन्नताएं, विशेषताएं और विचित्रताएं भी हैं। मार्क्सीय विज्ञान को लागू करते हुए असीम धैर्य और उचित ज्ञान के साथ एआईएमएसएस को विकसित करने के लिए इन तमाम भिन्नताओं और विविधताओं का बारीकी से अध्ययन करना होगा। मैं वरिष्ठ नेताओं से कहूँगा कि आप में से ज्यादातर बूढ़ी हो रही हैं लेकिन मानसिक तौर पर आपको हमेशा जवान बने रहना चाहिए। जितना ज्यादा आप कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों को समझेंगी, मन से उतनी ही जवान आप बनी रहेंगी। आपको जूनियर कॉमरेडों को अपने खुद के बच्चों की तरह विकसित करने की जरूरत है। गुस्से में आकर उनके साथ एक दमनकारी सास की तरह व्यवहार मत कीजिए। स्नेह और प्यार से उन्हें शिक्षित करिए, उनकी देखभाल करिए। उनसे गलती हो सकती है। तो क्या हुआ? आप से भी तो गलती होती है, हम भी गलती करते हैं। इसलिए कठोर मत बनिए, बेचैन मत हो जाइए। आपका रुख-रवैया ठीक वैसा ही होना चाहिए जैसा देखभाल करने वाली माँ का होता है। जो स्कूली शिक्षा पूरी नहीं कर सकी, लेकिन गर्व के साथ अपनी बेटी को पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए पढ़ाई करने को प्रोत्साहित करती हैं। आपको जूनियर कॉमरेडों को इस प्रकार विकसित करना चाहिए। उन्हें संघर्ष के जरिये आपके स्तर को पार कर जाने दें। वह आपकी सफलता होगी न कि असफलता। जूनियर कॉमरेडों को माँ की तरह सीनियर कॉमरेडों की इज्जत करनी चाहिए। आज, यह संगठन इतना बड़ा हो गया है। लेकिन, शुरूआती दौर में वरिष्ठ नेताओं को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तन से शिक्षित और प्रेरित होकर उन्होंने बहुत सी बाधाओं का मुकाबला किया। इसलिए न केवल उनकी उम्र और तजुर्बे का लिहाज करो बल्कि उनके संघर्ष का भी आदर करो। उनके संघर्ष से सीखो। नेताओं को अपनी उन्नत संस्कृति, उच्च सांगठनिक क्षमता, समर्पण और निष्ठा के बल पर जूनियर कॉमरेडों का सम्मान और प्यार अर्जित करना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 6 का शेष)

जूनियर कॉमरेडों के सामने उदाहरण पेश करिए। सौहार्दपूर्ण वातावरण पैदा करिए जिससे कि जूनियर कॉमरेड अपने मन को, अपने मतभेदों व आलोचनाओं को बेझिझक और सहजता के साथ अभिव्यक्त कर सकें। मतभेदों को तर्क-विचार के जरिए सुलझाना है, उन्हें दबाना नहीं चाहिए। सामूहिक क्रियाकलाप और व्यक्तिगत पहलकदमी दोनों को मिलाइए। बुर्जुआ बुराइयों जैसे घटियापन, प्रतिस्पर्धा, इर्षा, खुद को बढ़ाचढ़ा कर पेश करना और नाम, शौहरत व पद की लालसा रखना आदि को दूर करना है। कॉमरेड शिवदास घोष की रचनाओं, अन्य मार्क्सवादी क्लासिक्स, शरत्चन्द्र और नवजागरण काल के अन्य लेखकों, महिला क्रान्तिकारियों सहित तमाम महान क्रान्तिकारियों के जीवन-संघर्षों के नियमित अध्ययन के लिए कॉमरेडों को प्रोत्साहित करिए। नियमित राजनैतिक क्लास आयोजित करिए। हर सदस्य को कुछ न कुछ सामाजिक, सांस्कृतिक, जनकल्याणकारी गतिविधियों में लगा रहना चाहिए। इस तरह हर एक को सक्रिय करिए। नवागंतुकों को शामिल कराने के तरीके खोजने में धैर्यपूर्वक अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करिए, देखिए कि कौन सा काम वह तत्परता से और खुशी के साथ करना स्वीकार करेगी और उसी के मुताबिक उसे काम सौंपिए। उन्हें शिक्षित करिए कि किस प्रकार असुविधाओं को सुविधाओं में तब्दील करना है और असफलता को सफलता में बदलना है। महिला समस्याओं पर संघर्ष गठित करते समय आपको मजदूरों, किसानों, छात्रों, नौजवानों सहित तमाम शोषित-पीड़ित लोगों के संघर्ष के साथ एकजुटता का इजहार करना चाहिए।

उच्च मानवीय गुणों व भावनाओं को पनपाइए

याद रखिए, प्यार, स्नेह, भावनाएं–ये सब उच्च मानवीय तत्व हैं जैसा कि कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा बताया गया है। प्यार और स्नेह के आधार पर सम्बन्ध सुन्दर बन जाता है। लेकिन किस प्रकार का स्नेह और प्यार? क्या यह किसी अमीर आदमी की सम्पत्ति के लिए प्यार है या किसी महिला के शारीरिक सौंदर्य के प्रति आकर्षण? आपको उच्च भावनाओं, उच्च बौद्धिक सम्पदा और खजाने, कोमल केयरिंग मन की सुन्दरता का सम्मान और प्यार करना चाहिए। वरना वह सिर्फ एक धोखा होगा। असल प्यार किसी को कमजोर नहीं बनाता है बल्कि उन्हें ताकत देता है। लेकिन बहुत से साहित्यों में आप पायेंगी कि प्यार और कमजोरी को पर्यायवाची के रूप में दिखाया गया है। 'मैं कमजोर पड़ गई हूँ क्योंकि मैं आपसे प्यार करती हूँ।' जिस भी संस्कृति के आप अधिकारी हों, जो भी व्यवहार आप दर्शाएं, जो भी मानसिक रुझान आप प्रतिबिंबित करें, मैं उसकी तरफ से आँखें मूँदे हुए हूँ क्योंकि मैं कमजोर हूँ।' क्या सच्चे प्यार के रूप में इसकी प्रशंसा की जा सकती है? निश्चित ही नहीं। लेकिन, 'मैं मजबूत हुआ महसूस करूंगा अगर मेरा प्यार सिद्धांत पर, नैतिकता पर आधारित हो। सच्चा प्यार किसी को अंधा नहीं बनाता है, किसी के विकास की प्रक्रिया को अवरुद्ध नहीं करता है, किसी को पीछे की ओर नहीं खिंचता है। बल्कि यह किसी को सच्चे इन्सान के तौर पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है, किसी को सामाजिक दायित्व निभाने, सामाजिक संघर्ष विकसित करने में और अधिक प्रोत्साहित करता है। क्योंकि मैं सभी पिताओं से प्यार करता हूँ इसलिए मैं अपने पिता से प्यार करता हूँ। मेरे पिता के प्रति मेरा सम्मान पितृत्व के प्रति सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है। क्योंकि मैं सभी माताओं से प्यार करता हूँ, इसलिए मैं अपनी माता से प्यार करता हूँ। मेरे पति के लिए प्यार सच्चे पुरुषत्व के लिए मेरी श्रद्धा से पैदा होता है। मेरे बच्चों के लिए मेरे प्यार की प्रकृति भी इसी तरह की होनी चाहिए। यही है प्यार की ठोस अभिव्यक्ति, सर्वजनीन प्यार की अभिव्यक्ति। लेकिन सम्बन्ध का स्वरूप अलग-अलग है। मेरे पिता के प्रति मेरे नजरिये का स्वरूप वैसा नहीं है जैसा कि मेरी माता के प्रति मेरा है। मेरे पति या भाई के प्रति मेरे नजरिये का स्वरूप एक जैसा नहीं है। प्यार है लेकिन अभिव्यक्ति का स्वरूप अलग है। लेकिन प्यार अगर नीति-नैतिकता, संस्कृति और सिद्धांत से महरूम है तो यह सिर्फ खोखला शब्द रह जाएगा। अगर जड़ को काट दिया जाए तो पेड़ पर पत्ते या फल नहीं लगेंगे। कोई अगर सामाजिक दायित्व, सिद्धांत, नैतिकता से विछिन्न है तो वह सच्चा प्यार नहीं कर सकता है। यह प्यार मजाक बनकर रह जाएगा। जो क्रान्तिकारी विचारधारा के लिए प्रतिबद्ध है, सामाजिक संघर्ष के लिए कुर्बानी दे सकता है केवल वही सभी से प्यार और स्नेह कर सकता है, कर सकती है।

कॉमरेडो, निश्चित ही आप देख रहे हैं कि किस तरह पारिवारिक जीवन तेजी से तबाह हो रहे हैं। ज्यादातर घर अब मिठास भरे नहीं, बल्कि कड़ुवाहट भरे हो गए हैं। घोर खुदगर्जी, घटियापन, आत्म-केन्द्रिकता, नैतिक मूल्यों से रहित जीवन सभी परिवारों को लील रहा है। जैसे पूँजीवादी समाज में पूँजी सर्वेसर्वा है, उसी तरह आज परिवार में पैसा है। बड़ी उम्र, बुद्धिमता की कोई पूछ नहीं है। जैसे दूसरों का शोषण करके व्यक्तिगत मुनाफा कमाना पूँजीवाद का एकमात्र उद्देश्य है, इसी प्रकार पारिवारिक जीवन में परिवार के अन्य सदस्यों की कीमत पर आत्म-संतुष्टि, अपनी मौजमस्ती और आत्म-स्वार्थ सिद्धि करना हो गया है। ज्यादातर वैवाहिक जीवनों में कोई आपसी विश्वास या सम्मान नहीं है। इसकी बजाय आज वैवाहिक जीवन में संदेहों की काली छाया, झगड़े-कलह, अशांति छाई हुई है। और बच्चे इसके सबसे ज्यादा भुक्तभोगी हैं। बूढ़े असमर्थ माता-पिता को कमाने वाले बेटों द्वारा बेसहारा छोड़ दिया जा रहा है। क्या ही दयनीय दशा है! मरती हुई पूँजीवादी सभ्यता का बदसूरत चेहरा आज यही है। अगर समाज ही नैतिक मूल्यविहीन हो जाए, तो प्यार, कोमल भावनाएं, सूक्ष्म अनुभूतियाँ, दायित्वबोध जैसे उच्च मानवीय गुण बरकरार नहीं रह सकते हैं। व्यक्तिगत चेतना सामाजिक चेतना की ठोस अभिव्यक्ति है। लेकिन आज, सामंती धार्मिक मूल्य मर रहे हैं, बुर्जुआ मानवतावादी मूल्य लगभग निशेषित हो चुके हैं और सर्वहारा नैतिक मूल्यों की जानकारी अभी ज्यादातर आबादी को होनी बाकी है। इसलिए नैतिकता के क्षेत्र में पूर्ण रिक्तता व्याप्त है। नतीजतन, पतित बुर्जुआ संस्कृति और कुप्रवृत्तियाँ जीवन के मर्मवस्तु को ही खोखला कर दे रही है। नैतिक मूल्यों से विहीन लोग अमानवीय बनते जा रहे हैं। यही है तमाम सामाजिक व्याधियों का मूल कारण।

कॉमरेडो, मैं आपको भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली महिला शहीद प्रीतिलता वाद्देदार की एक अपील का स्मरण कराना चाहता हूँ। क्या आप जानती हैं कि उन्होंने क्यों 21 साल की उम्र में अपनी जान कुर्बान की थी? वे एक गरीब परिवार से आई थी और उन्हें स्कूल टीचर की एक नौकरी भी मिल गई थी। सब कुछ कुर्बान करते हुए वे स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुई थी और इस पितृसत्तात्मक समाज को यह संदेश देने के लिए ही उन्होंने शहीद की मौत को गले लगाया था कि महिलाएं भी आजादी के लिए लड़ सकती हैं, आजादी के लिए जान कुर्बान कर सकती हैं। भारतीय महिलाओं से आजादी आन्दोलन में शामिल होने की अपील करते हुए उन्होंने अपनी जान कुर्बान की थी। फांसी से ठीक पहले सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगत सिंह ने भारतीय माताओं से एक जोरदार अपील की थी। उन्होंने कहा था कि इस उम्मीद के साथ हंसते-हंसते फांसी का फंदा चूमेंगे कि भारत की माताएं अनेक भगत सिंहों को जन्म देंगी। क्रान्तिकारी कवि नजरूल ने भी भारतीय महिलाओं से और भी खुदीरामों की माताएं बनने की अपील की थी। इन अपीलों का प्रत्युत्तर देना अभी बाकी है। कॉमरेड शिवदास घोष के आह्वान का प्रत्युत्तर देकर आज हम यह कर सकते हैं और इस तरह, मार्क्सवाद और सर्वहारा नैतिकता से लैस होकर पूँजीवाद-विरोधी क्रान्तिकारी आन्दोलन में शिरकत करें।

सही क्रान्तिकारी रास्ते पर जनआन्दोलन संगठित करें

कॉमरेडो, राजनैतिक अज्ञानता, हताशा-निराशा, उदासीनता और नैतिक पतन चाहे जिस भी हद तक हो, साथ ही साथ काली घटाओं में रुपहली चमक की तरह आशा की किरण भी है। जीवन की घनघोर समस्याएं लोगों को और महिलाओं तक को भी आगे आने और लड़ने के लिए मजबूर कर रही हैं। जबरन भूमि अधिग्रहण के खिलाफ नंदीग्राम, सिंगूर और देश की दूसरी जगहों पर अनपढ़ महिलाएं भी संघर्षरत पुरुषों से कंधे से कंधा मिला कर बहादुरी के साथ लड़ीं। बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, क्रूर कत्ल, लाठीचार्ज, आँसू गैस और गोलियों से उन्हें झुकाया नहीं जा सका। दिल्ली को किसी समय राजनैतिक तौर पर बहुत ही ठण्डा, बहुत ही उदासीन और आत्मकेन्द्रित समझा जाता था। लकिन इस बार हमें एक न्यारी तरह की दिल्ली देखने को मिली। एक दरिन्दगी से किये गये बलात्कार ने प्रतिवाद की आग भड़का दी और पूरे देश को उत्तेजित कर दिया। महिलाएं भी अभूतपूर्व रूप से बहुत बड़ी संख्या में सड़कों पर उतर आयी और पानी की बौछार करने वाली तोपों, आँसू गैस, लाठीचार्ज का बहादुरी से सामना किया। हम यहाँ-वहाँ विभिन्न मुद्दों पर असंतोष का छिटपुट, बिखरा हुआ विस्फोट होता देख रहे हैं। लेकिन इन स्वत:स्फूर्त आन्दोलनों को सैद्धान्तिक, सांस्कृतिक और सांगठनिक तौर पर मार्गदर्शन के लिए और उन्हें सुसंगठित, दीर्घस्थाई संघर्षों में तब्दील करने के लिए सही नेतृत्व की दरकार है। समस्त भारत इस नेतृत्व की माँग कर रहा है। केवल आप ही यह नेतृत्व दे सकती हैं, अगर आप खुद को कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा के आधार पर शिक्षित कर लें। इसलिए आपसे मेरी अपील है कि वक्त के इस तकाजे का जवाब दें। यहाँ मैं, एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के महासचिव के तौर पर मानव सभ्यता के सभी महापुरुषों की महान कामना का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। मैं महान मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन, माओ और शिवदास घोष के क्रान्तिकारी सपने का प्रतिनिधित्व करता हूँ। मैं जैसा समझ पाया वैसी आपके सामने उनकी अपील पेश कर दी है। इसलिए इस सम्मेलन का समापन आपके काम की समाप्ति नहीं होना चाहिए। एक नई शुरूआत हो, संघर्ष के एक नये दौर की शरूआत हो। आप और भी ज्यादा बढ़चढ़ कर जिम्मेदारी लें। इस बात का इन्तजार न करें कि आपको कोई जिम्मेदारी दी जाती है या नहीं। आप खुद-ब-खुद जिम्मेदारी लें। जिस तरह कॉमरेड शिवदास घोष ने सिखाया, उसी तरह सामूहिक व व्यक्तिगत तौर पर काम करें। बहादुरी के साथ, साहस के साथ हालात का मुकाबला करें। हालात क्रान्तिकारी संघर्ष के लिए बहुत ही अनुकूल हैं। लोगों की कामना है कि प्रतिवाद हो, लोगों की तमन्ना है कि संघर्ष हो, लोगों की अभिलाषा है कि इस व्यवस्था का बदलाव हो। आये दिन यह अभिलाषा व्यक्त की जा रही है। क्या है जो मुक्ति की राह रौशन कर सकता है? केवल मार्क्सवाद-लेनिनवाद- शिवदास घोष चिन्तनधारा ही यह कर सकती है। इस महान क्रान्तिकारी विचारधारा से आपको शिक्षित, प्रेरित होना होगा और लाखों लाख महिलाओं को संगठित करना होगा। मुझे आशा है कि आप इस मिशन को पूरा करेंगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं यहीं अपनी बात खत्म करता हूँ। आप सबको मैं धन्यवाद देता हूँ। इस सम्मेलन को शानदार सफल बनाने के लिए उनके अथक प्रयास के लिए मैं ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन के नेता-कार्यकर्ताओं और मेजबान राज्य कमेटी को धन्यवाद देता हूँ।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा जिन्दाबाद
हमारे नेता, शिक्षक, महान मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम
एआईएमएसएस जिन्दाबाद

1.परिवार, निजी सम्पत्ति और राजसत्ता की उत्पत्ति - एंगेल्स, 2. वीमैन एण्ड कम्युनिज्म - लेनिन, 3. वीमैन एण्ड कम्युनिज्म - स्तालिन, 4, 5. विद्यासागर रचना समग्र, 6. शिक्षा- स्वामी विवेकानन्द, 7. हरिजन, 27 फरवरी, 1937, 8. नारी शिक्षा - रवीन्द्र रचनावली 11वां खण्ड, 9. शरत् रचनावली 5वां खण्ड, 10, 11, 12. शेष प्रश्न, शरत्चन्द्र, 13, 14, 15. नारी मुक्ति के प्रसंग - शिवदास घोष (सभी अंग्रेजी मुखपत्र प्रोलिटेरियन एरा से अनुदित)

सर्वहारा दृष्टिकोण अखबार का ब्यौरा व अन्य विवरण फॉर्म 4 (नियम 8 देखिए)

प्रकाशन का स्थान	: 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए. करोल बाग, नई दिल्ली-110005
प्रकाशन की अवधि	: पाक्षिक
मुद्रक का नाम	: गिरिजेश्वर सिंह
राष्टीयता	: भारतीय
पता	: 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए. करोल बाग, नई दिल्ली-110005
प्रकाशक का नाम	: गिरिजेश्वर सिंह
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए. करोल बाग, नई दिल्ली-110005
सम्पादक का नाम	: गिरिजेश्वर सिंह
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए. करोल बाग, नई दिल्ली-110005
उन व्यक्तियों के नाम एवं पते जो अखबार के स्वामी है या जो कुल पूँजी के एक प्रतिशत या उससे अधिक के हिस्सेदार हैं	: सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया(कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय कमेटी

मैं गिरिजेश्वर सिंह, एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि दिए गए उपरोक्त विवरण मेरी पूरी जानकारी एवं विश्वास के आधार पर सत्य है।

ह. गिरिजेश्वर सिंह
दिनांक : 7 मार्च, 2013 प्रकाशक के हस्ताक्षर

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Printing : 5 March, 2013

सफल आम हड़ताल के लिए एआईयूटीयूसी ने दी मजदूरों को बधाई

सरकार को झुकने के लिए मजबूर कर देने के लिए दीर्घस्थाई संयुक्त संघर्ष के लिए तैयारी का किया आह्वान

'' लम्बे अर्से से लम्बित 10 सूत्री माँगें मनवाने की खातिर केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के संयुक्त आह्वान पर 20-21 फरवरी, 2013 को हुई दो दिवसीय देशव्यापी आम हड़ताल में स्वत:स्फूर्त व्यापक पैमाने पर की गई भागीदारी के लिए हमारे देश के करोड़ों मेहनतकश लोगों को'' ऑल इण्डिया यूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर साहा ने 22 फरवरी को जारी एक बयान में बधाई दी। उन्होंने आगे कहा, ''माँगों में अन्य बातों के अलावा महंगाई रोकने और रोजगार पैदा करने के लिए ठोस कदम उठाने, स्थाई प्रकृति के कामों का ठेकेदारीकरण बंद करने, केन्द्रीय व राज्य सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों का पूँजी विनिवेश रोकने, सभी के लिए सुनिश्चित पेन्शन, श्रम कानून सख्ती से लागू करने और ऐसे कानूनों के उल्लंघन पर सख्त सजा देने, शेड्यूल एम्पलाइमेन्ट्स के निरपेक्ष सभी तबकों के मजदूरों को न्यूनतम वेतन कानून के सर्वव्यापक कवरेज में लाने, पीएफ, बोनस एक्ट में निर्धारित सीलिंग खत्म करने और ग्रेज्युटी में बढ़ोतरी शामिल हैं। इस हड़ताल में न केवल इन माँगों के हक में मेहनतकश लोगों का प्रश्नातीत समर्थन साफ तौर पर प्रतिबिंबित हुआ है, बल्कि सुधारों, उदारीकरण और निजीकरण की नीतियों के खिलाफ बढ़ता आक्रोश और दृढ़ निश्चय भी साफ तौर पर प्रतिबिंबित हुआ है। ये नीतियाँ भूमण्डलीकरण की नीति की ही उपज हैं जिन्हें केन्द्र और राज्यों की सरकारों द्वारा दो दशकों से भी ज्यादा अर्से से लागू किया जा रहा है चाहे उनकी राजनैतिक प्रतिबद्धता जो भी रही हो। अपने सैद्धांतिक मतभेदों के बावजूद एक स्वमान्य साझे न्यूनतम कार्यक्रम पर संयुक्त आन्दोलन निर्मित करने के लिए सभी केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के द्वारा आहूत दो दिन की देशव्यापी हड़ताल आजादी के बाद की अवधि में देश ने पहली बार देखी है। अत: सभी राज्यों में और संगठित क्षेत्रों सहित अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में, हर जगह तमाम तरह की धमकियों, संत्रासों, गिरफ्तारियों, सुनियोजित सशस्त्र हमलों की परवाह न करते हुए, यहाँ तक कि हरियाणा में एक हड़ताली कर्मचारी की हत्या के बावजूद अपनी माँगों के समर्थन में और साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के विरोध में नारे बुलन्द करते हुए हजारों की संख्या में मजदूर सड़कों पर उतर आये। दो दिवसीय हड़ताल ने जनविरोधी और मजदूर-विरोधी नीतियों के खिलाफ ''एकता-संघर्ष-एकता'' का अनुसरण करते हुए, संयुक्त दीर्घकालिक जुझारू संघर्ष गठित करने की मेहनतकश लोगों की बढ़ती हुए चाह को भी सामने ला दिया है।

उपरोक्त बातों के मद्देनजर हम देश की पूरी मजदूर बिरादरी से आग्रह करते हैं कि वे चल रहे आन्दोलन को नाकाम या हतोत्साहित करने या दिशा से भटकाने की किसी भी साजिश के खिलाफ चौकस रहें और अन्तिम विजय के लिए सही दिशा में संयुक्त आन्दोलन को और भी तेज करने का संकल्प लें।''

केन्द्रीय बजट.. (पृष्ठ 1 का शेष)

दबाव कई गुना बढ़ जाएगा। आर्थिक मुद्दों पर सरकार को सलाह देने के लिए और टैक्स ढांचा आदि तय करने के लिए बहुत सी एक्सपर्ट कमेटियों और आयोगों का गठन भी संसद की भूमिका में अधिकाधिक कटौती और एग्जीक्युटिवों के हाथों में और भी ज्यादा शक्ति देने की ओर इशारा करता है जो और कुछ नहीं बल्कि फासीवाद के नक्शेकदम हैं। जब बढ़ती महंगाई, विकराल रूप लेती बेरोजगारी, रोजगार हानि में बढ़ोतरी, बढ़ती भुखमरी, जानलेवा गरीबी और आधारभूत स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा तक वस्तुत: कोई पहुंच न होने की मार झेल रही गरीबों और सर्वहाराओं की बड़ी भारी संख्या यह उम्मीद कर रही थी कि सरकार उनके बचाव में आएगी, लेकिन इन मुद्दों में से एक को भी तव्वजो देने की बजाय बजट शासक एकाधिकारी पूँजीपतियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के वर्ग स्वार्थ साधने का चालाकी से ड्राप्ट किया हुआ दस्तावेज बन गया है जिसमें चासनी में डुबी हुई बातों, कर्णप्रिय शब्दों और ऊलजलूल आर्थिक जुमलों की भरमार है।

लोगों से हम आह्वान करते हैं कि वे बजट के इस जनविरोधी चरित्र को महसूस करे और अपने विरोध की आवाज बुलन्द करें।

रेल बजट 2013-14 में चालाकी भरे छलावे से यात्री किराये व माल भाड़े में बढ़ोतरी का एसयूसीआई (सी) द्वारा कड़ा विरोध

एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 27 फरवरी, 2013 को निम्नलिखित बयान जारी किया :

गत जनवरी में अति अलोकतांत्रिक एग्जीक्यूटिव लेजिस्लेशन रूट के जरिये सभी श्रेणियों के किराये-भाड़ों में 21% की हालिया बेतहासा बढ़ोतरी के बाद टैरिफ में कोई बढ़ोतरी न करने का आश्वासन देशवासियों को देने के बावजूद, रेल मंत्री ने यात्री किराये में एक और बढ़ोतरी थोप कर उन्हें सरासर धोखा दिया है। हालांकि यह बढ़ोतरी, सभी ए सी श्रेणियों में आरक्षण शुल्क, आरक्षण रद्द शुल्क, तत्काल टिकट शुल्क और लिखाई खर्च में बढ़ोतरी के छद्मावरण में की गई है। सर्वोपरि, सुपर फास्ट ट्रेनों में सभी श्रेणियों के लिए सप्लीमेंटरी शुल्कों में 50% की अतिरिक्त बढ़ोतरी की गई है, यह भली-भांति जानते हुए कि ज्यादातर एक्सप्रेस ट्रेनों को सुपर फास्ट का दर्जा दे दिया गया है, यह बढ़ोतरी दरअसल तमाम श्रेणियों के लिए है। इसके अलावा, मंत्री महोदय ने कहा है कि अभी तो वे मूल यात्री किराये में कोई बढ़ोतरी नहीं कर रहे हैं, जो इस बात का इशारा करता है कि किराये में कभी भी और कितनी ही दफा बढ़ोतरी का विकल्प खुला है। सबसे खतरनाक बात यह है कि किराये ढांचे में जब चाहे तब मनमानी बढ़ोतरी करने का फैसला लेने के लिए, रेल मंत्री ने चुनी हुई संसद को धता बताने के निर्लज्ज कदम के रूप में, अलग रेलवे टैरिफ अॅथोरिटी गठित करने का प्रस्ताव दिया है जिसे किराये और सरचार्ज बढ़ाने का अधिकार प्राप्त होगा और संसद में पास कराने की जरूरत भी नहीं रहेगी। इसी प्रकार माल भाड़े में लगभग 6% के इजाफे का एक और झटका दिया गया है और 'डायनेमिक फ्यूल एडजेस्टमेंट कम्पोनेन्ट' को लागू करने के जरिये एक साल में कम से कम दो बार माल भाड़ा बढ़ोतरी का प्रावधान किया गया है। इसके चलते आवश्यक वस्तुओं सहित रेलवे के जरिये ढुलाई किये जाने वाले तमाम सामानों की कीमतों में भारी उछाल आयेगा और लोगों का खून और भी तेजी से निचोड़ा जाएगा। जबकि बेलगाम भ्रष्टाचार, व्यापक पैमाने पर चोरी और भारी फिजूलखर्ची को रोकने, खर्च में किफायत लाने के साथ-साथ दूसरे उचित उपाय खोजने के जरिये राजस्व बढ़ाने की मांग निरन्तर उठाई जा रही है लेकिन मंत्री महोदय ने इस बारे में एक भी शब्द नहीं बोला। इसलिए यह साफ जाहिर है कि आने वाले दिनों में भी उपरोक्त कारकों के चलते भारी लूटखसोट बेरोकटोक बढ़ती रहेगी। इसकी वजह से बजट घाटे के आंकड़ों में और भी इजाफा होगा और सरकार इसकी पूर्ति करने का राग अलापते हुए, पीड़ित लोगों पर किराये और माल भाड़े में बढ़ोतरी का और भी बोझ लाद देगी। वैसे यह कहने की कोई खास जरूरत नहीं है कि वायदों को लागू करने की समय सीमा के बारे में सुस्पष्ट वचनबद्धता नहीं रहने, नियमित अंतरालों पर वाजिब कार्रवाई रिपोर्ट पेश करने और इस प्रकार नागरिकों के प्रति मंत्रालय को जबावदेह बनाने के अभाव में यात्री सुविधा और सुरक्षा को सुधारने के तमाम रिवाजी वायदे, जैसे कि रस्मी तौर पर मौजूदा रेल मंत्री ने भी किये हैं, सभी झांसा मात्र हैं। इसके अलावा, जबकि रेल संचालन के हर क्षेत्र में गिरावट है जैसे गाड़ियों का देरी से चलना, डिब्बों व ट्रैकों की जर्जर हालत, अस्वच्छ रखरखाव और ट्रैकों की अनुपयुक्त निगरानी आदि नाकाबिले बर्दाश्त हैं लेकिन सेवा में आई इस कमी को मान्यता देने में मंत्री महोदय ने एक शब्द भी जाया नहीं किया। जबकि यात्रियों की शारीरिक सुरक्षा को गंभीर खतरे में डालती हुई बड़ी संख्या में गंभीर प्रकृति की दुर्घटनाएं अक्सर घट रही हैं लेकिन रेल मंत्री ने जीवन-मरण के इस सवाल को नजरअंदाज करना ही बेहतर समझा और सुरक्षा के मुद्दे पर गौर करने की सिर्फ रिवाजी इच्छा दोहरा दी। तथाकथित ''पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप'' (पीपीपी) पर चलने वाले क्षेत्रों में और इजाफा करके मंत्री महोदय ने रेलवे के संभावित निजीकरण की स्कीम को भी एक कदम और आगे बढ़ाया है।

वैसे यह कहने की कोई खास जरूरत नहीं है कि लोग दिखावे के लिए तमाम हो हल्ले के सिवाय तथाकथित विपक्ष, खासकर नकली मार्क्सवादियों ने केन्द्र सरकार की जनविरोधी नीतियों और फैसलों की बौझार के खिलाफ संगठित जन आन्दोलन गठित करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया है जो केन्द्र सरकार को तत्परता से अपना शोषणचक्र चलाते जाने दे रही है। यह भी देखा जा सकता है कि भाजपा अपने घृणित चुनावी स्वार्थ में इस बजट को पास होने दे रही है हालांकि विरोध का भी कुछ दिखावा कर रही है। हम उत्पीड़ित लोगों से जोरदार अपील करते हैं कि वे आगे आयें और एक के बाद एक होने वाले इन हमलों के खिलाफ जोरदार संयुक्त दीर्घस्थायी आन्दोलन खड़ा करें और इस स्वेच्छाचारी सरकार को इन विनाशकारी नीतियों को लागू करने से बाज आने के लिए मजबूर कर दें।

20-21 फरवरी की हड़ताल में विभिन्न राज्यों की तस्वीरें

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com ; sarvaharadrishtikon@gmail.com